अवध भारती पत्रिका

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, बी–1,एन0ई–ब्लाक, द्वितीय तल, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ –226010 दूरभाष 0522–2720834

संरक्षक एवं मुख्य संपादक : श्री एच0टी0 सुरेश, कार्यकारी निदेशक–लखनऊ

वरिष्ठ संपादक : श्री रत्न प्रकाश, संयुक्त महाप्रबन्धक (वित्त) प्रभारी–क्षेत्रीय प्रमुख

संपादक : श्री आर0के0 श्रीवास्तव, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि0)

सह संपादक : श्री अयाज़ उद्दीन, वरि0 प्रबन्धक (परि0)/हिन्दी नोडल अधिकारी

सम्पादकीय सलाहकार : सुनील कुमार, प्रबन्धक (वित्त)

परिकल्पना एवं साज–सज्जा : श्री राजीव शर्मा, सहा0 महाप्रबन्धक (आई0टी0) एवं श्री सुनील कुमार वर्मा, उपप्रबन्धक (आई0टी0)

विशिष्ट सहयोग : श्री संजय कुमार, उप महाप्रबन्धक (परि0)
श्री अनिल कुमार, वरि0 प्रबन्धक (राजभाषा),
श्री अनिल कुमार वर्मा प्रबन्धक(वित्त),
श्री रवि रंजन चौधरी उपप्रबन्धक(वित्त),
श्री कान्ती बल्लभ, सहायक प्रबन्धक
श्री दिनेश बधानी ए0एफ0 (एस0जी) एवं समस्त लखनऊ कार्यालय के सहयोगी बन्धु।

''देश हमें देता है सब कुछ। हम भी तो कुछ देना सीखें''

''अनुभव एक अद्भुत चीज है इसके रहते आप कोई गलती दोहराने पर हर बार उसे पकड़ लेते हैं''

''ज्ञान धन से उत्तम है। धन की तो तुम्हें रक्षा करनी पड़ती है, पर ज्ञान स्वयं तुम्हारी रक्षा करता है''

आवरण पृष्ठ लखनऊ का ऐतिहासिक रूमी दरवाजा है

अवध भारती हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ, बी–1, एन0ई–ब्लाक, द्वितीय तल, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ –226010 दूरभाष 0522–2720834

सभी रचनाओं के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार है। लेखक के साथ सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नही है।

******

अनुक्रमणिका

रचनाकारों के नाम	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
संदेश श्रीमान् कामरान रिजवी, अध्यक्ष एवं प्रबन्धक निदेशक	04	सूचना का अधिकार (RTI) लिखनें का तरीका श्री अनिल कुमार वर्मा, प्रबन्धक, (वित्त)	24-25
संदेश श्री एम0नागराज, निदेशक कारपोरेट प्लानिंग	05	कोरोना वायरस (कोविड–19) श्री सुनील कुमार वर्मा, उपप्रबन्धक, (आई0टी0)	26-27
संदेश श्री श्री डी0 गुहान, निदेशक वित्त	06	आजादी का अमृत महोत्सव श्री रवि रंजन चौधरी, उप प्रबन्धक, (वित्त)	28
संदेश श्री अजय मिश्रा, मुख्य सतर्कता अधिकारी	07	नये भारत के विकास में महिलाओं की भागीदारी विन्ध्यवासिनी पाण्डेय, उप प्रबन्धक (परि0)	29
संदेश श्रीमती उपन्दिर कौर, महाप्रबन्धक (राजभाषा)	08	ट्रांसफर श्री सुनील कुमार, प्रबन्धक (वित्त)	30
संदेश श्री एच0टी0 सुरेश, कार्यकारी निदेशक लखनऊ,संरक्षक एवं मुख्य संपादक	09	मेरे ऑगन में धूप खिली–कविता श्री कान्ती बल्लभ, सहायक प्रबन्धक	31
वरिष्ठ संपादक की कलम से श्री रत्न प्रकाश, संयु0 महाप्रबन्धक(वित्त) प्रभारी– क्षेत्रीय प्रमुख एवं वरिष्ठ संपादक	10	गमलों में सब्जी उगाएँ श्री दिनेश चन्द्र बधानी ए0एफ0 (एस0जी0)	32
संपादक की कलम से श्री आर0के0 श्रीवास्तव, संयु0 महाप्रबन्धक(परि0) संपादक	11	मॉं का प्यार कु0 ज़ैनब अयाज़ पुत्री श्री अयाज़ उद्दीन वरिष्ठ प्रबन्धक, (परियोजना)	33
सह–संपादक की कलम से श्री अयाज़ उद्दीन वरिष्ठ प्रबन्धक (परि0) एवं सह सम्पादक	12	मान मा0 फरहान ज़ाबरी पुत्र श्री अयाज़ उद्दीन वरि0 प्रबन्धक, (परियोजना)	34
जल संरक्षण : सामयिकी श्री आर0के0 श्रीवास्तव, संयु0 महाप्रबन्धक, (परियोजना)	13-16	विचारों के मनोभावों की अद्भुत कहानी : राजा भोज और व्यापारी मा0 उत्कर्ष वर्मा पुत्र श्री अनिल कुमार वर्मा प्रबन्धक, (वित्त)	35
जागरूक भारत–समृद्ध भारत श्री अरूण कुमार राणा, संयु0 महाप्रबन्धक, (परि)	17-18	हडको क्षेत्रीय कार्यालय में कार्पोरेट की सामाजिक जिम्मेंदारी की अन्तर्गत स्वीकृत परियोजना	36-37
हडको की स्वर्ण जयन्ती–स्मृति एवं योगदान श्री एस0एन0 गुप्ता, वरिष्ठ प्रबन्धक, (विधि)	19-20	लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में गतिविधियां (1) हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा (2) हडको क्षेत्रीय कार्यालय में जागरूकता सत्ताह	38-39
बेटा–बेटी एक समान श्री अयाज़ उद्दीन, वरिष्ठ प्रबन्धक, (परियोजना)	21-22	अवध भारती के चौथे अंक के विमोचन का चित्र एवं उत्तर प्रदेश के विकास में हडको का योगदान	40
भारतीय संस्कृति श्री अनिल कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक, (राजभाषा)	23	अन्तिम कवर पृष्ठ	41

******

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ अपनी हिन्दी पत्रिका **''अवध भारती''** का पाँचवा अंक प्रकाशित करने जा रहा है। ''अवध भारती'' में लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के विभिन्न अधिकारियों के योगदान से प्रकाशित सामग्री अत्यन्त ज्ञान वर्धक एवं सुरूचिपूर्ण है।

यह गर्व की बात है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के साथ–साथ उत्तर प्रदेश के विशेष परियोजना कार्य जैसे लोहिया आवास योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना व गंगा एक्सप्रेसवे इत्यादि से भी जुड़ा है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में यह सराहनीय प्रयास जारी रहेगा।

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय एवं सम्पादक मंडल को पुनः बधाई एवं शुभकामनाएं।

कामरान

कामरान रिज़वी
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संदेश

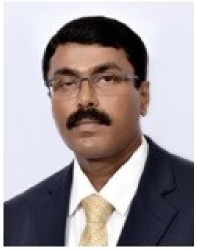

यह अत्यंत गर्व का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ अपनी हिन्दी पत्रिका "**अवध भारती**" के पाँचवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से एक ओर जहाँ कर्मचारियों की मौलिक लेखन प्रतिभा का विकास होता है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार की पृष्ठभूमि को भी एक महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ द्वारा हिन्दी कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार की दिशा में किए जा रहे प्रयास अत्यन्त सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

एम नागराज
निदेशक कॉर्पोरेट प्लानिंग

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ अपनी हिन्दी गृह पत्रिका **"अवध भारती"** के पांचवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। किसी भी कार्यालय की गृह पत्रिका अपनी संस्था के दर्पण के समान होती है। जिसके माध्यम से कार्यालय के सभी कार्यकलाप एवं गतिविधियाँ तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा प्रतिबिम्बित होती है। मैं आशा करता हूँ कि "अवध भारती" पत्रिका इन सभी विशेषताओं से परिपूर्ण होते हुए अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करेगी।

पत्रिका के नियमित एवं सफल प्रकाशन के लिए विशेष शुभकामनाएँ।

डी गुहन
निदेशक वित्त

संदेश

यह जानकर अत्यंत खुशी की अनुभूति हुई है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ अपनी हिन्दी गृह पत्रिका "**अवध भारती**" के पाँचवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस गृह पत्रिका में हडको के कार्यकलापों एवं राजभाषा के प्रसार–प्रचार से जुड़े लेख समाहित हैं। मैं इस पत्रिका के प्रकाशन की सराहना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार के सकारात्मक प्रयास किए जाते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अजय मिश्रा
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश

यह हर्ष एवं गौरव की बात है कि हडको का लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी गृह पत्रिका **"अवध भारती"** के पांचवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। 'क' क्षेत्र में होने के कारण हमारा यह दायित्व और भी बढ़ जाता है कि हम अपना शत–प्रतिशत कार्य हिन्दी में करें।

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के इस महत्वपूर्ण प्रयास के लिए मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी निरंतर एवं नियमित रूप से पत्रिका का प्रकाशन करते रहेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय एवं सम्पादक मण्डल को बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

उपिन्दर कौर
महाप्रबन्धक (राजभाषा)

संदेश

मुझे यह सूचित करते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है कि हडको के लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "**अवध भारती**" का पाँचवा अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस गृह पत्रिका में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ, विभिन्न लेख एवं कहानी आदि समेकित रूप से प्रस्तुत की जा रही हैं। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के इस पत्रिका प्रकाशन से राजभाषा के प्रचार–प्रसार के अतिरिक्त हडको के विभिन्न कार्यकलापों की हिन्दी में जानकारी भी सभी को प्राप्त हो सकेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन से जुड़े सम्पादक मंडल एवं सभी कार्मिकों को मेरी शुभकामनाएं।

एच. टी. सुरेश
कार्यकारी निदेशक (परियोजना)/
लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय

: वरिष्ठ सम्पादक की कलम से :

अपने सम्मानित पाठको के हाथों में अवध भारती हिन्दी पत्रिका का पांचवाँ अंक सौंपते हुए हर्ष हो रहा है। आशा है कि आप सभी जिज्ञासु पाठकों को यह पत्रिका पसन्द आयेगी। इसे लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय के सभी सहायोगियों ने तैयार किया है। इसलिए इसे घरेलू पत्रिका भी कह सकते है।

मित्रों, राजभाषा की दृष्टि से लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय ''क'' क्षेत्र में आता है। इसलिए इस कार्यालय की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि हिन्दी में अधिकाधिक पत्राचार हो, पत्रावलियों में हिन्दी में टिप्पण लिखे जायें। मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यलय के सभी कर्मयोगी साथी अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक हिन्दी में अपने कार्यो का निष्पादन कर भी रहे है। मैं भी हिन्दी भाषी क्षेत्र का होने के नाते, हिन्दी में कार्य करना पसन्द करता हूँ। जिसका परिणाम यह है कि हम हिन्दी राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को छूने के निकट हैं।

साथियों, इस पत्रिका में हडको कार्यालय के सभी कर्मयोगियों ने और उनके परिवार के सदस्यों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया है। सभी लोगों ने अपनी–अपनी रूचि के अनुसार लेख और कविताएँ प्रकाशन के लिए दी है और पात्रिका प्रकाशन में सभी का अपेक्षित सहयोग मिला है। इसलिए मैं अपने सभी सहयोगियों का और उनके परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ।

ई–पत्रिका होने के कारण सभी क्षेत्रीय कार्यालयों से और मुख्यालय के सभी गुणी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि इस ई–पत्रिका को जरूर खोलें और अपनी रूचि और समय के अनुसार अध्ययन करें। तत्पश्चात् प्रकाशित लेखों और कविताओं पर अपनी बेबाक टिप्पणी से हमें अवश्य अवगत करायें। आपके सुझावों एवं मार्गदर्शन का स्वागत रहेगा।

बहुत–बहुत आभार एवं धन्यवाद।

रत्न प्रकाश
संयुक्त महाप्रबन्धक(वित्त)
प्रभारी–क्षेत्रीय प्रमुख
वरिष्ठ सम्पादक

''संतोष वह पारस है जो जिस व्यक्ति को स्पर्श करता है उसे सोना बना देता है''

सम्पादक की कलम से

अवध भारती का पांचवाँ अंक निर्गत करते हुए हर्ष हो रहा है। आशा है आप सबको यह पत्रिका सुरूचिकर लगेगी। पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएं कार्यालय के ही रचनाकारों एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा लिखी गई है, इसके अतिरिक्त पत्रिका में कार्यालय की गतिविधियों को भी समाहित किया गया है। हिन्दी विषय पर बहुत सारी पठनीय सामग्री उपलब्ध कराई गयी है जो आपको पसन्द आयेंगी। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के साथ साथ हिन्दी की सृजनशीलता को आप सभी के समक्ष मुखरित करने के प्रति वचनबद्ध है, यही भावना हमारे रचनाकारों ने लेखनी के माध्यम से अपनी अनुभूतियों को सशक्त रूप से प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया।

जहाँ तक हिन्दी की बात है हम सब हिन्दी भाषी क्षेत्र के रहने वाले है इसलिए हिन्दी में कार्य करने में या बोलने में कोई दिक्कत नही है। इसलिए मुख्यालय द्वारा तय मानदण्डों पर खरा उतरना ही होगा। साथियों हम केवल हिन्दी मास या पखवारे तक ही सीमित न रह जायें बल्कि साल भर उसी गति से कार्य करते रहें जिस गति से सितम्बर मास में करते हैं।

आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि हम सब हिन्दी भाषी कर्मनिष्ठ योगी अपनी पूर्ण क्षमता के साथ राजभाषा हिन्दी में कार्य करेगें। पत्रिका प्रकाशन और इससे जुड़े हुए सभी सहयोगियों को बहुत–बहुत साधुवाद।

आर0 के0 श्रीवास्तव
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि0)
सम्पादक

सह–सम्पादक की कलम से

कार्यालय के कार्य में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मुख्यालय द्वारा प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय में एक हिन्दी नोडल अधिकारी और एक हिन्दी नोडल सहायक के नाते कार्य सौपा जाता है। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में जब यह गुरूत्तर दायित्व मुझे सौपा गया तो मन में विचार आया कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में सभी कर्मयोगियों द्वारा अपनी क्षमता के अनुसार हिन्दी में अधिकाधिक कार्य सम्पादन तो किया ही जाता है। लेकिन यदि अपने सहकर्मियों में छुपी हुई साहित्यिक गतिविधियों को निखारने के लिए एक घरेलू पत्रिका का प्रकाशन किया जाय जिससे कि हडको कर्मियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता बढे, और लिखने की अभिरूचि भी जाग्रत हो।

मुझे आपसे यह साझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि संयुक्त महाप्रबन्धक(वित्त) द्वारा इस योजना पर तत्काल सहमति व्यक्त कर दी गई कि लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय से पूर्व वर्षो की भाँति अवध भारती पत्रिका का प्रकाशन किया जाय। मित्रों इस पत्रिका को मूर्तिरूप देने में सभी अधिकारियों का योगदान है। यह अवध भारती पत्रिका आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए मुझे विश्वास है कि पत्रिका में दिये गये लेख, कविताएं और समसामयिक विषयों की जानकारी पाठकों उपलब्ध करायेगी।

यह ई–पत्रिका आप सभी सुधी पाठको को समर्पित करते हुए आशा करता हूँ इसे एक बार अवश्य खोलेंगे, और अपने बहुमूल्य विचार से हमें अवश्य अवगत करायेंगे। पत्रिका प्रकाशन में यदि कोई त्रुटि पाठको संज्ञान में आती है तो उसे जरूर अवगत करायें ताकि भविष्य में आने वाले अंक में सुधार किया जा सके। इस ई–पत्रिका में भाग लेने वाले सभी रचनाकारों और इसमें सहयोग देने वाले उनके परिवार के सदस्यों को बहुत बहुत आभार।

अयाज़ उद्दीन
वरिष्ठ प्रबन्धक(परि0)
सह–संपादक

धैर्य जीवन के लक्ष्य का द्वार खोल देता है, क्योंकि धैर्य के अतिरिक्त उस द्वार की कोई और कुंजी नही है।

जल संरक्षण: सामयिकी

जल ही जीवन है, यह हम सब जानते हैं, यह सत्य है कि जल के बिना हम धरती अथवा किसी भी अन्य ग्रह पर जीवन की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं, संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन का आधार जल ही है। धरती पर कोई ऐसा प्राणी नहीं है जिसे जल की आवश्यकता न हो। जल जीवन के लिए नितांत आवश्यक है। इसीलिए सभी जन सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुईं। जल हमें समुद्र, नदियों, तालाबों, झीलों, वर्षा एवं भूजल के माध्यम से प्राप्त होता हैं गर्म हवाओं के चलने से समुद्र, नदियों, झीलों, तालाबों का जल वाष्पित होकर ठंडे स्थानों की ओर जाता है जहाँ पर कम तापमान के कारण संघनित होकर वर्षा के रूप में गिरता है। जबकि पहाड़ों पर और भी न्यून तापमान होने के कारण जल बर्फ के रूप में जम जाता है एवं गर्मी के दिनों में पिघलकर नदियों में आता है। जल एक प्राकृतिक संसाधन है जोकि हमारे देश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, बस इसके संरक्षण एवं उचित इस्तेमाल की आवश्यकता है, जिससे हम जल अभाव से बच सकेंगे। हमारी पृथ्वी का 70 प्रतिशत भाग जल से ढका हुआ है, परन्तु यह जल पीने योग्य नहीं है, क्योंकि इस जल का लगभग 97 प्रतिशत हिस्सा महासागरों में खारे पानी के रूप में है। पीने योग्य मीठा जल धरती पर उपलब्ध जल का केवल एक प्रतिशत ही है, तथा शेष भाग समुद्र में खारे पानी तथा ध्रुवों पर बर्फ के रूप में जमा है। हमारे पास जल स्रोत के रूप में नदियां, तालाब, झरने, कुएं, बावड़िया आदि है, जिनके उचित इस्तेमाल, संरक्षण एवं प्रदूषण से बचाने की जरूरत है। बढ़ती जनससंख्या, औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण के कारण जलस्रोतों एवं भूजल का अत्यधिक दोहन हो रहा है, जिसके कारण इन जल स्रोत्रों पर दबाव बढ़ा है तथा प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता घट रही है। हमारी आबादी का एक बहुत बड़ा भाग आज भी पीने योग्य पानी के लिए वर्षा जल पर आश्रित है, अतः हमें जल की महत्ता को समझना होगा तथा इसका उपयोग प्रकृति की एक अमूल्य धरोहर समझकर सावधानी से करना होगा।

भविष्य में सभी को पर्याप्त जल मिले इसके लिए हमें आज से ही इसके संरक्षण एवं संचय के बारे में विचार करना होगा, यदि हम जागरूक नहीं होंगे तो यह एक महा संकट बन जाएगा।

जल की महत्ता समझिये, जल बिन यह जग सून
जल न रहे जीवन न रहे, बन जाए धरती सून।

आज हमारे देश के कुछ राज्यों जैसे महारास्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों तथा बुंदेलखण्ड प्रांत में जल संकट अत्यंत खतरनाक स्थिति में पहुँच गया है। यहाँ पानी के लिए लोग मीलों तक भटक रहे हैं एवं रोज मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। पिछले वर्ष शिमला में भीषण जल संकट की समस्या हुई जो एक संकेत देता है कि यदि अभी भी इस ओर ध्यान नहीं दिया तो बहुत देर हो जायेगी। इस वर्ष भी मई एवं जून महीने में जल संकट देश के कुछ राज्यों जैसे महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और पश्चिमी उत्तर के बुंदेलखण्ड प्रांत में अत्यंत खतरनाक स्थिति में पहुँच गया तथा लोगों को पानी के लिए संघर्ष करना पड़ा, सौभाग्यवश इन राज्यों में मानसून की अच्छी वर्षा होने से इस संकट से लोगों को मुक्ति मिली। भूगर्भ विशेशज्ञों का मानना है कि यह जल संकट भूजल के अंधाधुंध दोहन का परिणाम है। यह भविष्य के एक बहुत बड़े खतरे का संकेत है, क्योंकि पानी के अत्यधिक दोहन से जमीन के अंदर उत्प्लावन बल कम होने लगता है, जिससे जमीन धंसने लगती है तथा उसमें दरारें पड़ने लगती है, भूजल के उत्पलावन बल को बनाए रखने के लिए पानी को समुचित मात्रा में जमीन में रिचार्ज करते रहना होगा, यह तभी सम्भव है जब ग्रामीण व शहरी

क्षेत्रों में भूजल के दोहन को नियंत्रित किया जाए, वर्षा जल का संचयन हो, ताकि पानी जमीन के अंदर प्रवेश कर सके।

जल संरक्षण का अर्थः

हमारी पृथ्वी पर जल तीन स्वरूपों में उपलब्ध होता है
तरल जल–समुद्र, नदियों, झरने, तालाब, कुएं आदि,
ठोस जल–पहाड़ों एवं ध्रुवों पर जमी बर्फ एवं
वाष्प के रूप में बादलों में।

जल संरक्षण का अर्थ केवल उसके संरक्षण तक ही सीमित नहीं है, इसका अर्थ पानी की बर्बादी उसके दुरूपयोग एवं प्रदूषण को रोकने से भी है। जल का संरक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि वर्षाजल हर समय उपलब्ध नहीं रहता है अतः पानी की कमी को पूरा करने के लिए इसके संरक्षण एवं उचित प्रबंधन की आवश्यकता है। इस वर्ष मानसून की अच्छी वर्षा हुई है, यदि इस वर्षा जल को ही संचित कर लें तो, पूरे वर्ष हमें जल उपलब्ध होगा और हम जल अभाव से बच सकते हैं।

जल संरक्षण की आवश्यकताः

जल संरक्षण आज के समय की आवश्यकता है, हम प्रतिदिन कई लीटर पानी का उपयोग अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करते हैं, परंतु हम कभी यह नहीं सोचते हैं कि, जिस पानी का उपयोग हम इतनी बेफिक्री से कर रहे हैं, क्या ये साफ पानी सभी को उपलब्ध है। हम अपने कामों में इतने व्यस्त हैं कि इस ओर हमारा ध्यान नही जाता है, परन्तु हमारी जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग आज भी पीने योग्य साफ पानी से वंचित है, यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि आज आजादी के 75 वर्षों के बाद भी लोगों को पीने योग्य साफ पानी उपलब्ध नहीं है, इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि जल संरक्षण की उपेक्षा करना, उसका प्रदूषण तथा लोगों में जल संरक्षण के लिए जागरूकता का अभाव होना। अब समय आ गया है कि हमारी सरकार एवं हम सभी जल संरक्षण के उपायों के प्रति जागरूक हों एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अमल करें। बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, प्रदूषण तथा अपशिष्ट जल के उचित प्रबन्धन का अभाव जल संकट के प्रमुख कारण हैं। गर्मी के मौसम में जल संकट हमारे देश के कई प्रदेशों में काफी मंडरा जाता है, जिसके कारण पानी की तलाश में लोगों को इधर–उधर भटकना पड़ता है, इसलिए वर्षा जल को संचित करने के उपाय करने होंगे, ताकि जल की कमी को दूर किया जा सके। हमारे देश में वर्षा ऋतु के समय पर्याप्त पानी बरसता है इसके उचित संचयन की आवश्यकता है ताकि हम इस जल का सदुपयोग कर जल संकट को दूर कर सके। वर्षा जल संचयन के लिए वर्षा ऋतु से पहले तालाबों, पोखरों (छोटे तालाब), कुंओं आदि का निर्माण एवं पुराने जलस्रोतों का पुनर्निमाण करने से वर्षा जल का संचयन तो होगा ही भू–जल स्तर को भी ऊपर कर पाने में भी हम सफल हो सकेंगे। आज हमारा भू–जल स्तर अत्यधिक दोहन के कारण बहुत ही नीचे जा चुका है, जो कि एक चिंता का विषय है। बहुत–सा वर्षाजल जानकारी एवं उचित संरक्षण के अभाव में बह जाता है, इसलिए इस जल के उचित संरक्षण की शीघ्र आवश्यकता है। पहले बारिश के दिनों में वर्षा जल स्वतः ही भूमिगत जल को रिचार्ज कर देता था क्योंकि जमीन कच्ची होती थी, वर्षाजल धरती स्वयं ही सोंख लेती थी। आज हर तरफ कंक्रीटीकरण होने के कारण वर्षाजल भूमि में न जाकर बह जाता है। इस कारण भूजल स्तर नीचे होता जा रहा है। पिछले कई वर्षों से मुंबई एवं उसके आसपास के तटीय इलाकों में अत्यधिक वर्षा हो रही है परंतु इस जल के संचयन के लिए कोई भी पर्याप्त उपाय अभी तक नहीं हो पाया है, सारा जल बह कर समुद्र में चला जाता है तथा इस उप नगर की जनता पीने के पानी के अभाव का सामना गर्मियों में करती है, इस वर्षा जल के उचित संचयन के लिए रेन वॉटर हार्वेस्टिंग तकनीक का उपयोग करना होगा जिससे पानी की कमी को दूर किया जा सके एवं भूजल का स्तर जो कि बहुत नीचे होता जा रहा है ऊपर आ सके।

रेनवॉटर हावेस्टिंग दो तरीके से होता है:– प्राकृतिक एवं कृत्रिम।
प्राकृतिक रूप में वर्षाजल धरती की गहराईयों में स्वतः ही चला जाता है। यह काम प्रकृति स्वयं करती है। जमीन की पानी सोखने की क्षमता मिट्टी और उसके नीचे पाई जाने वाली चट्टानों के प्रकार पर निर्भर करता है। हमारे देश में विभिन्न प्रकार की मिट्टी होने के कारण धरती के विभिन्न भागों में पानी सोखने की क्षमता भी अलग–अलग है। रेतीली और बजरी मिली मिट्टी की परतों की ओर क्षीण चट्टानों में पानी अधिक रिसता और संचित होता है। पानी का बहाव भी जमीन के सोखने की क्षमता को प्रभावित करता है, तेजी से बरसने वाले पानी का अधिकांश भाग जमीन से बह जाता है, वही धीरे–धीरे बरसने वाले पानी का अधिकांश भाग जमीन सोख लेती है और भूजल रिचार्ज हो जाता है। भूमि का प्रकार भी पानी सोखने पर असर डालता है। बंजर जमीन या कठोर चट्टानों के ऊपर गिरे पानी का अधिकांश भाग सतह से बह जाता है, और रेतीली जमीन और जुते खेत में वर्षा जल का अधिकांश भाग जमीन सोख लेती है। इस तरह स्वतः जल संरक्षण को प्रकृति द्वारा सम्पन्न रेनवॉटर होर्वेस्टिंग कहा जा सकता है कृतिम तरीके से वर्षाजल के संरक्षण के लिए तालाब, स्टॉप डेम, चेकडैम, परकोलेशन टैंक जमीन के ऊपर या नीचे बनाये जाते हैं।

जल संरक्षण के उपाय:

यदि जल संरक्षित होगा एवं उसका सदुपयोग होगा तो यह जल हम उन लोगों तक पहुँचा सकते हैं, जिनको आज भी पीने योग्य पानी उपलब्ध नहीं है।

जल संरक्षण के लिए दो महत्वपूर्ण उपाय हैं, वर्षाजल संचयन तथा नदी जोड़ो परियोजना :

जल संरक्षण के लिए सबसे कारगर परियोजना है नदी जोड़ों परियोजना। यह एक महत्वाकांक्षी और महत्वपूर्ण परियोजना है यह नदियों के पानी का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करने का एक कारगर तरीका है। इस प्रक्रिया में अधिक पानी वाली नदी को कम पानी वाली नदियों से नहरों के माध्यम से जोड़ा जाता है। हमारे देश की अधिकांश नदियॉं जैसे कृष्णा, ताप्ती, गोदावरी, कावेरी आदि में पानी की मात्रा कम हो गयी है तथा यमुना, ब्रम्हपुत्र, कोसी, नर्मदा आदि में जलातिरेक की स्थिति है इसलिए नदी जोड़ों परियोजना पर काम किया जा रहा है, परंतु इस दिशा में अभी कोई बड़ी सफलता नहीं मिल पायी है, इसका प्रमुख कारण राज्यों के बीच जल बटवारे को लेकर सहमति न होना, केन्द्र की दखलंदाजी के लिए कोई कानूनी प्रावधान का नहीं होना, जिससे केन्द्र सरकार इस दिशा में सर्वसम्मति प्राप्त करा सके। साथ ही पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दे भी इस परियोजना की सफलता को प्रभावित करते हैं। मध्यप्रदेश में केन एवं बेतना नदी को जोड़ने का काम चल रहा है, यह देश का ऐसा पहला नदी जोड़ो प्रोजेक्ट है जिस पर कुछ प्रगति हुई है। इस परियोजना के तहत केन नदी का अतिरिक्त पानी नहरों के माध्यम से बेतवा नदी में डाला जाएगा। इस परियोजना के पूरा हो जाने से उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बुंदेलखण्ड क्षेत्र के सूखा प्रभावित क्षेत्रों को लाभ पहुंचेगा। केन्द्र सरकार ने कोसी तथा मेची नदी को जोड़ने के लिए 4900 करोड़ रूपये की राशि अभी हाल ही में स्वीकृत की है। यह देश का दूसरा सबसे बड़ा नदियों को जोड़ने का प्रोजेक्ट है। नदियों को आपस में जोड़ना एक बेहद कठिन काम है, क्योंकि संबद्ध राज्य पानी के बॅटवारे पर सहमति नहीं बना पाते हैं। देश भर में लंबे समय से विभिन्न राज्यों के बीच नदियों के जल बंटवारे को लेकर विवाद चल रहे हैं जिसका समाधान न्यायालय भी नही निकाल पा रहे हैं। यदि नदी जोड़ो परियोजना साकार होती है तो इससे कई लाभ होंगे, जैसे पेयजल की समस्या कम होगी जो कि अत्यंत आवश्यक है, कृषि की सिंचाई के लिए जल उपलब्ध होगा तो अन्न उत्पादन अधिक होगा, वनों का विस्तार होगा, जल विद्युत उत्पादन बढ़ेगा जिससे स्वच्छ ऊर्जा की प्राप्ति होगी, सूखे और बाढ़ जैसे आपदा कम होंगी तथा जल परिवहन को प्रोत्साहन मिलेगा।

नदी जोड़ो परियोजना के अन्तर्गत कुछ अन्य नदियों जैसे सुवर्णरेखा, वैतरणी, मेघना और महानदी जिनमें पानी की मात्रा ज्यादा है, उनके सतही पानी को संरक्षित करने के लिए स्थानीय स्तर के बड़े बॉधों कुएँ एवं तालाबों जिनकी जल संरक्षण क्षमता अधिक है, पानी का संचय करना चाहिए जिसका उपयोग आवश्यकतानुसार स्थानीय स्तर पर कर सकते हैं। जल संरक्षण एवं संचय के लिए केवल सरकार पर आश्रित रहने के बजाय हमें हर स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है। निम्नलिखित उपाय से जल संरक्षण स्थानीय स्तर पर कर सकते हैंः–

–नदियों पर बांध बनाकर उसमे पानी एकत्र करके आवश्यकतानुसार उपयोग में लाया जाए। गांवों में तालाबों, कुएं आदि का निर्माण कर जल संग्रह कर उसका उपयोग करें।

–कल कारखानों का दूषित पानी नदियों में न डालें जिससे नदियों का पानी साफ रहे एवं उसका उपयोग हो सके।

–नगरों, गॉवों कस्बों के दूषित जल निकासी की उचित व्यवस्था करने की आवश्यकता है अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगायें जिससे पर्यावरण संरक्षण तो होगा ही तथा ये वृक्ष वर्षा कराने में भी सहायक होते हैं।

–अनावश्यक रूप से भूमिगत जल का दोहन न हो इसलिए बोरिंग, ट्यूबवेल पर नियंत्रण लगाया जाए तथा उन पर भारी कर लगाया जाए एवं कठोर कानून बनाने की आवश्यकता है, ताकि पानी की बर्बादी रोकी जा सके।

–भवनों तथा सार्वजनिक स्थानों पर जल संरक्षण के लिए रेनवॉटर हार्वेस्टिंग तकनीक की व्यवस्था करनी चाहिए।

–जलापूर्ति के समय सह सुनिश्चित करना होगा कि जल का उचित संवहन तथा स्थानांतरण हो एवं कहीं पाइप फटा हो तो उसकी देखभाल व मरम्मत तत्काल हो सके जिससे पानी व्यर्थ ना हो।

–निःसंदेह उपर्युक्त उपायों पर अमल करने से जल संरक्षण अभियान को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी तथा जल संकट से निपटने में यह एक सकारात्मक पहल होगी। जनजागरण अभियान चलाकर जल संरक्षण सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि जन सहभागिता से जल की बचत प्रभावी ढंग से की जा सकती है।

जल संरक्षणः सबका कर्तव्य :

इन उपायों के द्वारा जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल अवश्यक की जा सकती है। यदि समाज का हर एक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी निभाने लगे तो जल संरक्षण को बल मिलेगा। अतः समाज के एक जागरूक अंग होने के नाते हमें जल संरक्षण का हर स्तर पर प्रोत्साहित करना होगा ताकि वर्तमान जल संकट की समस्या का समाधान हो सके।

हमारी भारतीय संस्कृति में जल को जीवन का आधार माना जाता है तथा जल को बर्बाद करना ठीक नहीं माना जाता है। अतः जल संरक्षण को एक जन अभियान बनाना चाहिए तथा समाज के हर व्यक्ति को इस जल संरक्षण अभियान में सहयोग करना चाहिए। क्योंकि जल हर एक व्यक्ति को चाहिए, इसलिए इसका संरक्षण भी प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं ही करना होगा इसके लिए हमें सरकारी सहायता पर ही निर्भर नहीं हो चाहिहए। समय की मांग है कि पूरा समाज इस अभियान से जुड़े तथा एक सामाजिक अभियान की तरह इस पर काम हो जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग अपेक्षित है ताकि जल की उपलब्धता एवं निरंतरता को सुनिश्चित किया जा सके।

आर0 के0 श्रीवास्तव
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि0)

''सबसे बेहतरीन नजर वो है जो अपनी कमियों को देख सके, क्योंकि नींद तो रोज खुलती है पर आँखे कभी–कभी''

जागरूक भारत–समृद्ध भारत

सिर्फ और सिर्फ सतर्कता के द्वारा ही हम किसी भी प्रकार के दोषों, अपराधों, बीमारियों या अन्य किसी भी प्रकार की नकारात्मक चीजों से बच सकते हैं, फिर भ्रष्टाचार तो एक छोटी बीमारी है। हॉ, यह एक सामाजिक और आर्थिक दोनों प्रकार की बीमारी है। यह बिल्कुत सही नहीं है कि भ्रष्टाचार को खत्म किया जा सकता है। भ्रष्टाचार संसार में आदिकाल से है, भ्रष्टाचार को सिर्फ कम किया जा सकता है, बिल्कुल खत्म नहीं।

आज भारत का करप्श्न परसेप्शन इंडेक्स (एक प्रकार का वैश्विक इंडेक्स) के अनुसार 80वॉ स्थान है, जो कि पहले कभी 120वॉ हुआ करता था। आज भारत में भ्रष्टाचार पहले से काफी कम हुआ है, जिसके लिए भारत सरकार की नीतियों एवं पारदर्शिता काफी हद तक जिम्मेदार है। भारत के मुकाबले में चीन व रूस जैसे देशों में अधिक भ्रष्टाचार है।

गरीबी, भुखमरी, बेरोज़गारी, बढ़ती मंहगाई भ्रष्टाचार का ही तो परिणाम है। आज भ्रष्टाचार की वजह से गरीब और गरीब हो रहा है, और अमीर और अमीर। आज भारत की अर्थव्यवस्था को 2 प्रतिशत से भी कम लोग चला रहे हैं। जबकि भारत 138 करोड़ लोगों का है।

मुंशी प्रेमचंद्र की एक कहानी 'नमक का दरोगा' के अनुसार 'रिश्वत एक बहता हुआ सदा बहार झरना है, जो हमेशा प्यास बुझाता है जबकि मासिक आय सिर्फ एक पानी का गिलास'। इस झरने रूपी सोंच से बचने की आवश्यकता है।

महात्मा गांधी ने कहा है कि रिश्वत लेना अन्याय है' जबकि हमारे यहॉ समझा गया कि यह अन्य आय है। सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस पर मनाने वाला पर्व 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' है, जो कि लोगों में ईमानदारी सत्यनिष्ठा और जवाबदेही को प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति सतर्क और प्रतिबद्ध होना चाहिए।

सतर्क व समृद्ध भारत का अर्थः

इसका अर्थ है कि हर भारतवासी और भारत में काम करने वाले हर संस्थानों को उनके दिये गये उद्देश्य व लक्ष्यों को ईमानदारी, त्वरित प्रशासनिक कार्यो, स्वच्छता एवं दिशा निर्देशों द्वारा प्राप्त करना है, क्योंकि जो समाज या देश जागरूक नही होगा, सतर्क नहीं होगा, उसका विकसित होना थोड़ा मुश्किल है। अतः हम सभी लोगों का फर्ज है कि जागरूक बनें, सतर्क बनें। आजकल कुछ लोग यह भी कहते हैं कि 'ईमानदार वो होता है जिसे बेइमानी का मौका नही मिला। इससे पता चलता है कि भ्रष्टाचार किस गहराई तक हमारे दिलो–दिमाग में पहुँच गया है।

भ्रष्टाचार क्यों और कैसेः

वैसे तो भ्रष्टाचार की परिभाषा को सीधे सरकार और सरकारी कर्मचारियों को जोड़कर देखना चाहिए लेकिन यदि इसकी परिभाषा को थोड़ा बड़ा करते हैं तो इसका क्षेत्रफल सारे समाज की हर पहलू को छूता है। कोई भी क्षेत्र या सेक्टर ऐसा नही है, जहॉ भ्रष्टाचार का बोल–बाला न हो।

आखिर भ्रष्टाचार क्यों होता है? कुछ कारण निम्न हैं:–

– देश का लचीला कानून।
– न्याय मिलने में देरी।
– स्वार्थ व असंतोष।
– समाज में असमानता।
– महत्वाकांक्षी व लोभी स्वभाव।
– मनुष्य/व्यक्ति का आचरण।
– दबाव वश भ्रष्टाचार।
– सख्त कानून का न होना।

उपरोक्त की वजह से न जाने कितने ही घोटाले हुए, जिनका घोटाला इतना है कि जैसे लगता है कि किसी छोटे देश का कुल बजट हो। कुछ घोटाले निम्न प्रकार हैं:–

– कोयला घोटाला।
– 2–जी स्पेक्ट्रम घोटाला।
– वक्फ बोर्ड घोटाला।
– राष्ट्र मण्डल खेल घोटाला।
– तेलगी घोटाला।
– चारा घोटाला, हर्षद मेहता घोटाला, बोफोस घोटाला, भर्ती घोटाला और न जाने क्या, क्या––––––?

अब मुख्य सवाल है कि इनको रोका कैसे जाए? या रोक भी सकते हैं कि नहीं। भ्रष्टाचार बढ़ने का मात्र एक कारण है कि भ्रष्टाचार का साथ देना या उसको होने देना। भ्रष्टाचार इसलिए होता है कि हम उसको होने देते हैं। हमें जहॉ तक हो सके इसका विरोध करना चाहिए और इसके विषय में सतर्कता और जागरूकता प्रदान करना चाहिए।

भ्रष्टाचार निवारण बिल (संशोधन–2013), इसके द्वारा सरकार ने भ्रष्टाचारियों पर लगाम लगाने की कोशिश की है, जो सराहनीय है।

हालॉकि पूर्णतया भ्रष्टाचार रोका नहीं जा सकता, परन्तु कम करने के कुछ उपाय निम्न हो सकतें हैं:–

– कर्मचारियों को अच्छा वेतन व सुविधाएं।
– दफ्तरो में लोगों की कमी न हो।
– कम्प्यूटराईज़ेशन (जिससे कम से कम लोग इन्वाल्व हों)।
– संक्षिप्त व कारगर कानून।
– लोकपाल कानून लागू करना आवश्यक।
– हर कार्यालय में सीसीटीवी कैमरे।
– कानून की प्रक्रिया में समय का सदुपयोग।
– टैट (टर्न एराउन्ड टाइम–वो समय जितने में काम पूरा हो जायेगा), उसको फिक्स करके।
– स्पीडी जजमेंट देकर।
– भ्रष्टाचारियों की मदद लेकर, भ्रष्टाचारियों को पकड़ना।

भ्रष्टाचार प्रशासन का एक बड़ा हिस्सा बन चुका है। कहावत है कि 'रिश्वत लेते पकड़े जाओ, तो रिश्वत देकर छूट जाओ'। भ्रष्टाचार देश की उन्नति में सबसे बड़ा बाधक बन चुका हैं जिसकी वजह से देश व समाज को क्षति पहुँच रही है। इसको दूर करने का सिर्फ एक ही मंत्र है कि सतर्क रहें, तभी भारत समृद्ध होगा।

(अरूण कुमार राणा)
संयुक्त महाप्रबन्धक (परि0)

हडको की स्वर्ण जयन्ती–स्मृति एवं योगदान

हमारी कम्पनी को 'द हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट फाइनेंस कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड' के रूप में 25 अप्रैल, 1970 को कम्पनी अधिनियम, 1956 के तहत एक निजी क्षेत्र की लिमिटेड कम्पनी के रूप में शामिल किया गया था, और तत्कालीन रजिस्ट्रार आफ कम्पनी, दिल्ली द्वारा निगमन का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था। इसके बाद हमारी कम्पनी का नाम बदलकर हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड कर दिया गया और 9 जुलाई 1974 को निगमन का नया प्रमाण पत्र तत्कालीन रजिस्ट्रार आफ कंपनीज, दिल्ली और हरियाणा द्वारा जारी किया गया। हमारी कंपनी को 9 दिसम्बर, 1996 को कम्पनी मामलों के मंत्रालय, वित्त मंत्रालय भारत सरकार द्वारा कम्पनी अधिनियम 1956 की धरा 4ए के तहत एक सार्वजनिक वित्तीय संस्था के रूप में अधिसूचित किया गया था। इसके अलावा एनएचबी ने 31 जुलाई, 2001 की हमें आवास एवं वित संस्थान के व्यवसाय को चलाने की अनुमति देते हुए पंजीकरण का प्रमाण पत्र जारी किया।

हमारी कंपनी की मुख्य वस्तुएं जो मेमोरण्डम में निहित हैः–

आवासी उद्देश्यों या वित्त के लिए घरों के निर्माण के लिए दीघ्रकालीन वित्त प्रदान करना या देश में आवास और शहरी विकास कार्यक्रम शुरू करना।

वित्त या उपक्रम, पूर्ण या ऑशिक रूप से नए या उपग्रह शहरी की स्थापना।

राज्य आवास और शहरी विकास बोर्ड, सुधार ट्रस्ट विकास प्राधिकरण आदि द्वारा जारी किये जाने वाले बाण्ड की सदस्यता के लिए, विशेष रूप से आवास और शहरी विकास कार्यक्रमों के लिए वित्त पोषण।

निर्माण सामग्री के औद्योगिक उद्देश्यों की स्थापना के लिए वित्त या उपक्रम करना।

भारत सरकार और अन्य श्रोतों से समय–समय पर प्राप्त धन की प्रशासन के लिए या देश में आवास और शहरी विकास कार्यक्रमों के वित्तपोषण या उपक्रम में प्रयोजन के लिए।

भारत एवं विदेशों में आवास और शहरी विकास कार्यक्रमों से संबंधित कार्यो की डिजाइनिंग और नियोजन की परियोजनाओं के लिए परामर्श सेवाओं को बढ़ावा देने, स्थापित करने, सहयोग और सेवा प्रदान करना।

आवास और शहरी विकास क्षेत्रों में वेंचर कैपिटल फण्ड के कारोबार को शुरू करने के लिए इन क्षेत्रों में नवाचारों की सुविधा और उपरोक्त क्षेत्रों में सरकार/सरकारी एजेंसियों द्वारा पदोन्नत वेंचर कैपिटल फण्ड्स की इकाईयों और शहरी में निवेश एवं सदस्यता लेना।

हडको की अपना म्युचुअल फण्ड स्थापित करने के लिए एवं इसकी सदस्यता लेने के लिए जिसका प्रयोजन शहरी विकास के लिए किया जायेगा।

उपरोक्त वस्तुएं मेमोरण्डम एसोसिएशन में शामिल मुख्य वस्तुओं के लिए मुख्य वस्तुखण्ड और वस्तुएं आकस्मिक एवं सहायक है, जो हमारे कंपनी को अपनी मौजूदा गतिविधियों की करने में सक्षम बनाती हैं।

हडको ने स्वर्ण जयंती वर्ष में सम्पूर्ण देश के गौरवशाली इतिहास विरासत, समृद्ध करना और संस्कृति की अनूठे अंदाज में दुनिया के सामने पेश करने का रोड मैप बना लिया है। इससे भावी विजन को 50 वर्ष मना रही हमारे कंपनी ने कार्यक्रमों का खाका स्वर्ण जयंती समारोहों के लिए स्तरीय समिति जिसकी अध्यक्ष माननीय अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की उपस्थिति में हुए बैठक में जारी किया जिसमें कुछ टारगेट तय किये गये हैं, ये टारगेट निम्न हैः–

– हडको में 50 स्वर्णिम लक्ष्य भी इस उम्मीद से तय किये हैं कि जो हमारे देश के भविष्य के लिए फायदेमंद होंगे।
– यह स्वर्णिम लक्ष्य आगामी दशक में राज्य के विकास के लिए एवं विजन और रोड मैप दोनों होगा।

हडको ने अपने मिशन पॉच में निम्न को सम्मलित किया है:–

– वर्ष में दस लाख आवासों का निर्माण।
– दो वर्षों में कुमुलेटिव ऋण आहरण की सीमा एक लाख करोड़
– एक हज़ार करोड़ की आय (लाभ टैक्स छोड़कर)
– सौ स्थानीय निकायों को सहायता प्रदान करना।
– प्रतिवर्ष 1 प्रतिशत ग्रास एनपीए को कम करना।

इसके अलावा हडको का निगमित सामाजिक दायित्वों के जरिए प्रत्येक दिन नये–नये आवास जोड़े जा रहे है।

हडको के मील के पत्थर:

1970–हडको की स्थापना महज दो करोड़ रूपये की इक्विटी से शुरू हुई।
1974–लागत कास्ट का पुनरूत्थान संशोधित वित्त पोषण पैटर्न जहॉ विभिन्न आय समूहों जैसे ईडब्ल्यूएस, एलआईजी, एमआईजी और एचआईजी के अनुरूप अंतर ब्याज दरों में अपनाया गया है।
1976–निम्न कास्ट हाउसिंग डिजाइन प्रतियोगिता भारत में पहली बार आयोजित की गयी जिसमें हडको की कुल 6 लेख पुरस्कृत हुई।
1977–ग्रामीण आवास की शुरूआत।
1979–शहरी विकास योजना की शुरूआत।
1981–लोक भूमि पर स्लम क्षेत्र के विकास की शुरूआत हुई।
1983–क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना ।
1985–कंसल्टेंसी अनुबन्ध की शुरूआत।
1988–ग्रामीण क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरूआत।
2015–एएए रैंक से सम्मानित हुई।
2017–राजभाषा कृर्ति पुरस्कार से सम्मानित।
2018–आईएसओ 9001:2015 से सम्मानित हुई।

आशा है कि भविष्य में भी हडको इसी प्रकार सफलता के नए आयात प्राप्त करता रहेगा।

एस0एन0 गुप्ता
वरि0 प्रबन्धक (विधि)

फूल खिलने दो, मधुमक्खियाँ अपने–आप उसके पास आ जायेगी। चरित्रवान बनो, जगत् अपने–आप मुग्ध हो जायेगा।

''अधिक अनुभव, अधिक सहनशीलता और अधिक अध्ययन यही विद्वता के तीन महास्तंभ है''

बेटा–बेटी एक समान

उत्तर प्रदेश के एक शहर में एक पति–पत्नी रहते थे उनके कोई संतान नही थी मतलब वे निःसंतान थे। उन दोनों की बड़ी इच्छा थी कि भगवान उनको एक बेटा दे। बहुत दिनों के बाद उनके यहां एक संतान का जन्म हुआ परन्तु वह संतान पुत्री थी यह देखकर दोनो पति–पत्नी बहुत दुखी हुए कि उनके यहां पुत्र पैदा नही हुआ है। फिर यह सोचकर मन में प्रसन्न हो गये कि अगली संतान बेटा ही होगा। दो वर्ष बाद, उन पति–पत्नी के यहां एक बार फिर पुत्री ने जन्म लिया। अब तो वे दोनो बहुत अधिक दुखी हो गये और कहने लगे कि हमारा भाग्य ही खराब है जिससे हमारे यहां बार–बार पुत्री का जन्म हो रहा है जो कि एक पराया धन है जिसका बड़े होकर विवाह करना होगा और हमारी धन दौलत दूसरे के घर ले जाएगी, बेटा होता तो कमा कर लाता और बुढापे में हमारी सेवा करता। उन दोनों का व्यवहार अपनी पुत्रियों के प्रति बहुत खराब होता गया। वह अपनी बेटियों को प्यार दुलार नही करते थे और छोटी–छोटी बात पर हर समय डाटते रहते थे। कुछ समय बाद भगवान की प्राप्त हुई उनके घर फिर खुशियां आयीं, अबकी बार उन लोंगों के यहां पुत्र ने जन्म लिया। उन दोनो का खुशी का ठिकाना नही था। उसका नाम प्रिंस रखा गया और उसे बड़े लाड़–प्यार से पालन–पोषण करने लगे। अब जो कुछ भी होता था उसी के लिए होता था। बेटियों को वह लोग कुछ भी नही देते थे। सब कुछ बेटे को ही दे देते। बेटियां यह देखकर बहुत दुखी रहती थीं। उनसे घर का काम काज भी करवाया जाने लगा। जब वह दोनो थोड़ा बड़ी हुयी तो उनका नाम सरकारी स्कूल में लिखवा दिया गया। जबकि पुत्र का नाम अंग्रेज़ी मिडीयम स्कूल में लिखवाया गया।

अब तीनों बच्चे धीरे–धीरे बड़े होने लगे। पुत्र प्रिंस अधिक मां–बाप के लाड़–प्यार के कारण बिगड़ने लगा। वह अपनी जायज़–नाजायज़ मांगो को पूरा कराने लगा। इधर वह दोनों पुत्रियाँ भली–भाँति से अपनी पढाई में मन लगाकर पढ़ने लगीं और अपनी कक्षाओं में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो रही थीं। एक दिन प्रिंस ने अपने पिता से रूपये 50,000.00 की मांग कर दी। पिता के इन्कार करने से वह घर छोड़कर छात्रावास में रहने लगा और उसने अपनी बाकी पढाई छात्रावास मे ही पूरी करी। उसके बाद उसको एक अच्छी नौकरी मिल गयी। इधर उन दोनो पुत्रियों की पढाई भी पूरी हो गयी और उन दोनों को अलग–अलग अच्छी नौकरियां भी मिल गयीं। परन्तु मां–बाप ने उन दोनों बेटियों पर कभी ध्यान ही नही दिया कि वह कैसी पढ़ाई कर रहीं हैं क्या कर रही हैं?

इधर उनके बेटे को अपनी ही कम्पनी में कार्यरत एक सुन्दर लड़की से प्रेम हो गया और उसने उससे विवाह करने की इच्छा जताई तो लड़की ने कहा कि मेरे माता–पिता को घर–जमाई दामाद चाहिए क्योंकि मै अपने मां–बाप की एकलौती संतान हूं तो तुम्हें अपने मां–बाप को छोड़ना होगा। प्रिंस ने यह सब सुनने के बाद यह तय किया कि वह अपने मां–बाप को छोड़ देगा और उस लड़की से शादी कर उसी घर में रहने लगेगा। फिर एक दिन उसने माता–पिता को बिना बताए उस लड़की से विवाह कर लिया और उसके घर में घर–जमाई बन कर रहने लगा।

जब यह बात पुत्र के माता पिता को पता लगी तो उनको बहुत बड़ा धक्का लगा वह दोनो बहुत दुखी हो गये और कहने लगे कि हमने क्या सोचा था बेटे के बारे में और बेटा क्या निकला? उन दोनो का दिल बुरी तरह से टूट गया उनके आंसू ही नही रूक रहे थे कि अब हम क्या करेंगे। अकेले बुढापें में अब मेरा कौन सहारा बनेगा। लेकिन वह यह बात भूल गये कि अभी उनकी दो बेटियां भी हैं जो अब बहुत अच्छी पद पर कार्यरत हैं। बेटियों ने कहा कि आप चिंता न करें हम दोनो आपकी देखभाल करेंगे ओर आपकी सेवा भी, आपको कोई परेशानी नही होने देंगे।

यह सुनकर उनके माता–पिता की आंखों में खुशी और पश्चाताप दोनों के आंसू थे कि हम लोग कितने गलत थे कि बेटा व बेटी समान नही होते हैं, बेटा कमा के लाएगा और बेटी धन लेकर जाएगी। लेकिन उनके साथ तो इसके उलट हो गया था, अब उनको ये एहसास हो गया था कि चाहे बेटा हो या बेटी, दोनों एक समान होते हैं, दोनो में अन्तर नही करना चाहिए। जिस तरह से बेटा का पालन–पोषण करना चाहिए उसी तरह से बेटी को भी प्यार–दुलार से पालना चाहिए। आज के युग में जितना बेटी का हक है उतना बेटी का भी है। इसलिए बेटी व बेटी में कभी भेद भााव नही करना चाहिए।

अयाज़ उद्दीन
वरि0 प्रबन्धक (परि0)

''प्रतिभा अपनी राह स्वमं निर्धारित कर लेती है और अपना दीप स्वयं ले चलती है''

''अपने अमूल्य समय का एक–एक क्षण परिश्रम में व्यतीत करना चाहिए, इसी में आनन्द है''

''जिस मनुष्य के हृदय में शीतलता निवास करती है। संसार भर में कोई मनुष्य उसकी बराबरी नहीं कर सकता''

मनुष्य के भीतर जो कुछ सर्वश्रेष्ठ है, उसका विकास प्रंशसा एवं प्रोत्साहन के द्वारा ही किया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है जो लगभग पांच हज़ार वर्ष पुरानी है। विश्व की पहली और महान संस्कृति के रूप में भारतीय संस्कृति को माना जाता है। विभिन्न संस्कृति और परम्परा के रह रहे लोग यहां सामाजिक रूप से स्वतंत्र हैं इसी वजह से धर्मों की विविधता में एकता के मज़बूत संबंधों का यहां अस्तित्व है।

समृद्ध संस्कृति और विरासत की भूमि है भारत जहां लोगों में इंसानियत, उदारता, एकता, धर्मनिर्पेक्षता, मज़बूत सामाजिक संबंध और दूसरे अच्छे गुण हैं। दूसरे धर्मों के लोगों द्वारा ढेर सारी क्रोधी क्रियाओं के बावजूद भी भारतीय हमेशा अपने दयालु और सौम्य व्यवहार के लिए जाने जाते हैं। अपने सिद्धांतों और विचारों में बिना किसी बदलाव के अपनी सेवा भाव और शांत स्वभाव के लिए भारतीयों की हमेंशा तारीफ होती है। भारत महान विभूतियों की भूमि है जहाँ महान लोंगो ने जन्म लिया और ढेर सारे सामाजिक कार्य किये।

वह आज भी हमारे लिए प्रेरणादायी व्यक्तित्व है। भारत महात्मा गांधी की भूमि है जहां उन्होंने लोंगों में अहिंसा की संस्कृति पल्लवित की है। उन्होंने हमेशा हम लोंगों से कहा कि अगर तुम वाकई बदलाव लेना चाहते हो तो दूसरों से लड़ाई लड़ने के बजाए उनसे विनम्रता से बात करो। उन्होंने कहा कि इस धरती पर सभी लोग प्यार, आदर सम्मान और परवाह के भूखे हैं। अगर तुम उनको सब कुछ दोगे तो निश्चित ही वह तुम्हारा अनुसरण करेंगे।

गांधी जी अहिंसा में हमेशा विश्वास करते थे अंग्रेज़ी शासन से भारत के लिए आज़ादी पाने में एक दिन वह सफल हुए। उन्होंने भारतीयों से कहा कि अपनी एकता और विनम्रता की शक्ति दिखाओ तब बदलाव देखो। भारत पुरूष और स्त्री जाति और धर्म आदि का देश नहीं है बल्कि ये एकता का देश है जहां जाति और संप्रदाय के लोग एक साथ रहते हैं।

भारत में लोग आधुनिक हैं और समय के साथ बदलती आधुनिकता का अनुसरण करते हैं फिर भी वो अपनी सांस्कतिक मूल्यों और परंपरा से जुड़े हुए हैं। भारत एक आध्यात्मिक देश है जहां लोग अध्यात्म में भरोसा करते हैं। यहां के लोग, ध्यान और दूसरे अध्यात्मिक क्रियाओं में विश्र्वास रखते हैं। भारत की सामाजिक व्यवस्था महान है जहाँ लोग आज भी संयुक्त परिवार के रूप में अपने दादा–दादी, चाचा, ताऊ, चचेरे भाई–बहन आदि के साथ रहते हैं। इसलिए यहां के लोग जन्म से ही अपनी संस्कृति और परंपरा के बारे में सीखते हैं।

अनिल कुमार
वरि0 प्रबन्धक (रा0भा0)

''प्रसन्नता वो पुरुस्कार है जो हमें हमारी समझ के अनुरूप सबसे सही जीवन जीने पर मिलती है''

''कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरूप हमें कर्म का एहसानमन्द होना चाहिए''

सूचना का अधिकार (RTI) लिखने का तरीका

टार0टी0आई0 मतलब है सूचना का अधिकार– ये कानून हमारे देश में 2005 में लागू हुआ। जिसका उपयोग करके आप सरकार और किसी भी विभाग से सूचना मांग सकते हैं। आमतौर पर लोगों को इतना ही पता होता है। परंतु आज में आपको इसके बारे में कुछ और रोचक जानकारी देता हूँ:–

सूचना का अधिकार से आप सरकार से कोई भी सवाल पूँछकर सूचना ले सकते हैं।
सूचना का अधिकार से आप सरकार के किसी भी दस्तावेज की जांच कर सकते हैं।
सूचना का अधिकार से आप दस्तावेज की प्रमाणित कापी ले सकते हैं।
सूचना का अधिकार से आप सरकारी कामकाज में इस्तेमाल सामग्री का नमूना ले सकते हैं।
सूचना का अधिकार से आप किसी भी कामकाज का निरीक्षण कर सकते हैं।
सूचना का अधिकार में कौन–कौन से धारा हमारे काम की हैं।

धारा 6 (1)– सूचना का अधिकार का आवेदन लिखने का धारा है।
धारा 6 (3)–अगर आपका आवेदन गलत विभाग में चला गया है। तो वह विभाग धारा 6(3)–धारा के अन्तर्गत सही विभाग में 5 दिन के अंदर भेज देगा।
धारा 7(5)–इस धारा के अनुसार बी0पी0एल0 कार्ड वालों को कोई सूचना का अधिकार शुल्क नहीं देना होता।
धारा 7(6)–इस धारा के अनुसार सूचना का अधिकार का जवाब 30 दिन में नहीं आता है तो सूचना निःशुल्क में दी जायेगी।
धारा 18–अगर कोई अधिकारी जवाब नहीं देता तो उसकी शिकायत सूचना अधिकारी को दी जाए।
धारा 8–इसके अनुसार वो सूचना, सूचना का अधिकार में नहीं दी जायेगी जो देश की अखंडता और सुरक्षा के लिए खतरा हो या विभाग की आंतरिक जांच को प्रभावित करती हो।
धारा 19(1)–अगर आपकी सूचना का अधिकार का जवाब 30 दिन में नहीं आता है तो इस धारा के अनुसार आप प्रथम अपील अधिकारी को प्रथम अपील कर सकते हो।
धारा 19(3)–अगर आपकी प्रथम अपील का भी जवाब नहीं आता है तो आप इस धारा की मदद से 90 दिन के अंदर दूसरी अपीलीय अधिकारी को अपील कर सकते हो।

आरटीआई कैसे लिखें?

इसके लिए आप एक सादा पेपर लें और उसमें 1 इंच की कोने से जगह छोड़े और नीचे दिए गए प्रारूप में अपने आरटीआई लिख लें।

सूचना का अधिकार 2005 की धारा 6 (1) और 6 (3) के अन्तर्गत आवेदन।

सेवा में,

अधिकारी का पद/जनसूचना अधिकारी
विभाग का नाम––––––

विषयःआरटीआई एक्ट 2005 के अन्तर्गत––––––––से संबंधित सूचनाएं।

अपने सवाल यहाँ लिखें।
1...........................
2...........................
3..........................
4..........................

मैं आवेदन फीस के रूप में 10 रू0 का पोस्टल आर्डर.........संख्या अलग से जमा कर रहा/रही हूँ।

या

मैं बीपीएल कार्डधारी हूं। इसलिए सभी देय शुल्कों से मुक्त हूं। मेरा बीपीएल कार्ड नं0............. है।

यदि माँगी गयी सूचना आपके विभाग/कार्यालय से संबंधित नहीं हो तो सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 6(3) का संज्ञान लेते हुए मेरा आवेदन सम्बंधित लोकसूचना अधिकारी को पॉच दिनों के समयावधि के अन्तर्गत हस्तान्तरित कर दें। साथ ही अधिनियम के प्रावधानों के तहत सूचना उपलब्ध कराते समय प्रथम अपील अधिकारी का नाम व पता अवश्य बतायें।

भवदीय,
नाम................
पता.................
फोन नं....................

हस्ताक्षर.......................

ये सब लिखने के बाद अपने हस्ताक्षर कर दें।

अब मित्रों केन्द्र से सूचना मांगने के लिए आप रू0–10/– देते है और एक पेपर की कॉपी माँगने के रू0–2/– देते हैं।

हर राज्य का सूचना का अधिकार शुल्क अलग–अलग है जिस का पता आप कर सकते हैं। सूचना का अधिकार का सदोपयोग करें और भ्रष्टाचारियों की सच्चाई/पोल दुनिया के सामने लाइये।

अनिल कुमार वर्मा
प्रबन्धक–वित्त

''प्रेम की गहराई कविता की वस्तु है जो साधारण बोल–चाल में व्यक्त नहीं हो सकती''

कोरोना वायरस (कोविड-19)

कोविड–19 एक गम्भीर श्वसन रोग है, जो 2019 के अंत में उभरा और दुनिया भर में तेजी से फैल रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड–19 को महामारी घोषित किया है। यह श्वसन समस्याओं से जुड़ा होता है, जिसमें आमतौर पर हल्की खॉसी बुखार होता है, लेकिन ये निमोनिया और सांस लेने में परेशानी जैसी गम्भीर रूप ले लेता है।

कोरोना वायरस का प्रकोप चीन के वुहान में दिसम्बर, 2019 के मध्य में शुरू हुआ था। बहुत से लोगों को बिना किसी कारण नियोनिया होने लगा और देखा गया कि पीड़ित में से अधिकतर लोग वुहान सी फूड मोकेट में मछलियों एवं जीवित पशुओं का व्यापार करते थे। चीनी वैज्ञानिकों ने बाद में करोना वायरस को एक नई नस्ल पहचान की, जिसे 2019–एन कोविड प्रारम्भिक पदनाम दिया गया।

करोना से आज तक पूरे विश्व में 20.70 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हो चुके हैं और 43.60 लाख लोग अपनी जान गवाँ चुके हैं। भारत में अब तक 3.22 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हो चुके हैं और लगभग 4.32 लाख लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे हैं। कोरोना ने पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को हिला दिया है। अमेरिका, भारत, ब्राजील, स्पेन, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, ईरान आदि लगभग 213 देश इसकी चपेट में आ चुके हैं। इस विनाशकारी महामारी ने पूरे विश्व में तबाही मचा रखी है। विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों ने विभिन्न वैक्सीन की खोज कर ली है जैसे कोवैक्सीन, कोवीशील्ड, स्पुतनिक, फाइजर कोविड, मोडरना, जान्सन एण्ड जान्सन इत्यादि। इसके साथ ही दवा की भी खोज वैश्विक पैमाने पर की जा रही है।

एक करोना प्रभावित व्यक्ति में तुरन्त असर नहीं दिखता। इससे संक्रमित होने के 4 से 14 दिन में इसके प्रभाव नजर आते हैं। कोरोना वायरस के जो लक्षण सामने आये हैं उनमें 90 प्रतिशत मामलों में बुखार, 80 प्रतिशत मामलों में थकान, सूखी खॉसी एवं उल्टी, और केवल 20 प्रतिशत मामलों में सॉस लेने में दिक्कत देखी गयी है। इसके अलावा बड़ी संख्या में लोगों को निमोनिया की भी शिकायत पायी गयी हैं।

संक्रमण का पता लगाने के लिए एक पीसीआर परीक्षण किट द्वारा जॉच की जाती है पुष्टि होने पर इसका इलाज किया जाता है इसके बाद इससे बचाव की वैक्सीन दी जाती है। अमेरिका, यूरोप, भारत सहित सभी देशों के डाक्टर्स कोरोना के इलाज और इसकी वैक्सीन बना लिया हैं। फिर भी बचाव इसका सर्वोत्तम उपाय है।

करोना से बचाव के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता और शारीरिक दूरी बनाये रखना अत्यन्त आवश्यक है।

– हाथों को बार–बार धोना और सैनिटाईज करना।
– मास्क पहने इसके साथ ही छींकते और खॉसते समय अपनी नाक व मुँह को रूमाल या टिशू पेपर से ढकें।
– चेहरे और ऑखों पर हाथों को टच नहीं करना चाहिए।
– अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बनायें इसके लिए पौष्टिक आहार खायें और योग को अपनी दैनिक आदमों में शामिल करें।

- हल्दी वाले दूध का कम से कम एक बार अवश्य सेवन करें।
- गुनगुना पानी पियें, भीड़–भाड़ वाली जगह जाने से बचें।

- तापमान एवं श्वसन लक्षणों की नियमित जॉच करें।
- किसी भी लक्षण अनुभव होने पर डाक्टर्स से परामर्श अवश्य ले।

भारत सरकार ने 4 चरणों में देश भर में लाक डाउन लगावाया था जो कि पहला चरण 25 मार्च से 14 अप्रैल तथा दूसरा 15 अप्रैल से 03 मई तीसरा चरण 4 से 17 मई व चौरा चरण 18 से 31 मई 2020 था। इस दौरान बेराजगारों को आर्थिक एवं अन्न की मदद भी की गयी। कोविड अस्पताल बनाए गये एवं उचित प्रबन्ध भी किये गये।

कोविड–19 का संक्रमण भारत सहित आज दूनिया के लगभग 213 देशों से अधिक देश प्रभावित हैं और इससे अब तक लगभग 20.70 करोड़ लोग प्रभावित हो चुके हैं और लभग 43.50 लाख लोगों की मौत भी हो चुकी है, लेकिन काफी मात्रा में लोग स्वस्थ भी हो चुके हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिक स्वास्थ्य संगठन के साथ मिलकर इसकी नयी से नयी दवा खोजने के प्रयास में लगे हैं। पूरा विश्व इस महामारी से ग्रसित हो चुका है। समय–समय पर विश्व स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य मंत्रालय ने इससे बचने के लिए नियमों का पालन करने हेतु सचेत भी किया था।

सुनील कुमार वर्मा
उप प्रबन्धक (आई0टी0)

''शान्ति को बाहर खोजना व्यर्थ है, क्योंकि वह तो आपके गले में पहना हुआ हार है''

''छोटी–छोटी खुशियों को पूरे मन से और जोश से मनाएं। इससे जीवन में उत्साह बना रहता है''

'सब्र एक ऐसी सवारी है जो अपने सवार को कभी गिरने नहीं देती ना किसी के कदमों में, न किसी की नजरों में'

****

आजादी का अमृत महोत्सव

हम आजादी का 75वाँ वर्ष मना रहे है। 2022 में हमें बापू की 150वीं जयन्ती मनाने जा रहे है। ऐसे में देश में स्वच्छ भारत मिशन, स्मार्ट सिटी और नया भारत बनाने का संकल्प लेकर चल रहे है। आजादी के बाद हम 75 वर्षो में कहाँ पर खड़े है, इसी को प्रदर्शित करने के लिए लखनऊ में दिनांक 5 सितम्बर से 7 सितम्बर 2021 तक त्रिदिवसीय आजादी का अमृत महात्सव एक्सपो आयोजित किया गया। जिसमें देश भर के नगर निगम एवं नगर निकायों के प्रतिनियों ने भाग लिया। जिसके उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ दिनांक 05 सितम्बर को माननीय प्रधान मंत्री द्वारा किया गया। स्वच्छता में इंदौर रैकिंग की चर्चा रही जो कि प्रति वर्ष स्वच्छता रैंकिग में प्रथम आता है। वहीं पर लखनऊ की भी चर्चा हुई जिसने अपने रैंकिग में सुधार किया। लखनऊ स्वच्छता रैकिंग में 10वीं पायदान पर है। माननीय आवासन एवं शहरी नगर विकास मंत्री श्रीमान हरदीप पुरी जी ने स्वच्छ और निर्मल आर0ओ0 वाटर उपलबध कराए जाने के लिए पुरी (उड़ीसा) की चर्चा की। उसके पश्चात दिनांक 06 और 07 सितम्बर को सामान्य जनता के लिए खोल दिया गया ताकि सामान्य जनता नई–नई टेक्नोलोजी का लाभ ले सके। भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही सी0एल0एस0एस0 ऋण पर ब्याज की सब्सिडी योजना क्रियान्वयन के लिए हडको सेन्ट्रल नोडल एजेन्सी बनाया गया है, इस कारण हडको द्वारा सी0एल0एस0एस0 योजना के प्रचार प्रसार के लिए अपना स्टाल लगाया गया। जिसमें दिल्ली से श्री अजय अरोड़ा और श्री राजीव चड्ढा दोनों अधिकारी तीन दिनों तक अनवरत स्टाल पर बैठे रहे। लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उन्हें सहयोग प्रदान किया गया। मुख्यालय से निदेशक कारपोट प्लानिंग श्रीमान् एम0 नागराज और श्रीमान् एच0टी0 सुरेश कार्यकारी निदेशक एच0आर0 में भाग लिया। इस एक्सपों में सम्पूर्ण भारत से लगभग हर प्रान्त झलकियाँ देखने को मिलीं। लो–कास्ट टेक्नोलोजी पर कैसे घर की छतें ढाली जा सकती हैं। दरवाजे खिड़की और शेड कैसे बनाये जा सकते है। इन सब का प्रदर्शन देखने को मिला।

रवि रंजन चौधरी
उप प्रबन्धक(वित्त)

नये भारत के विकास में महिलाओं की भागीदारी

यदि हमें अपने देश का नव निर्माण करना है तो महिलायों की आधी आबादी को बिना साथ लिये हम नये भारत का निर्माण नही कर सकते। नये भारत के विकास एवं तरक्की में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उनके बिना विकसित राष्ट्र व समृद्ध भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारत के विकास के लिए यह बेहद जरूरी है कि महिलाओं को शिक्षा में किसी भी प्रकार की कमी न आने दें। 'अगर आप एक पुरूष को शिक्षित कर रहे हैं तो सिर्फ एक पुरूष ही शिक्षित हो रहा है, परन्तु अगर यदि आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं तो पूरा परिवार शिक्षित हो रहा है।

महिलाओं के बिना नये भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आजकल कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है चाहे वह रक्षा हो, तकनीकी का हो, अन्तरिक्ष का हो या फिर व्यापार जगत का हो, आप कोई भी नाम लें, उस क्षेत्र में महिलाएं अग्रणी भूमिका निभा रही होगी। इसका प्रमाण यह है कि भारत में अनेक वर्ष तक श्रीमती इंदिरा गांधी महिला प्रधानमंत्री रही हैं। वर्तमान समय में भी कई मंत्री महिलाएं हैं। राष्ट्र की तीनों सेना के अंगों में महिलाएं प्रमुख भूमिका निभा रही है। इसरो द्वारा जितने भी रॉकेट अन्तरिक्ष में छोड़े जा रहे हैं, उनकी की टीम में 38 प्रतिशत से अधिक महिलायें ही हैं। विज्ञान के क्षेत्र में इनकी भूमिका सराहनीय है।

नारी को देवी, सह धर्मिणी, अर्धांगिनी, माँ, दादी, नारी पुत्री आदि सभी रूपों में इनकी भूमिका बहुत ही सराहनीय रही है। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहें हैं। वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल से ही भारत में महिलाओं को गौरवमयी स्थान प्राप्त था। स्मृतिकाल में भी––––

'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमते तत्र देवताः'

कह कर उसे सम्मानित किया गया है। उपरोक्त का अर्थ है कि जहाँ नारी को पूजा जाता है, वहॉ देवता निवास करते हैं।

आज की नारी राजनीति, कारोबार, कला व नौकरियों में पहुंचकर नये आयाम गढ़ रही हैं। ऑकड़े दर्शाते है कि प्रतिवर्ष कुल परीक्षार्थियों में 50 प्रतिशत डाक्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण करती हैं। हर साल लगभग 10वीं व 12वीं कक्षा में छात्रायें ही टाप कर रही हैं। आज़ादी के बाद 12 महिलायें विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। भारत के साफ्टवेयर उद्योग में 27 प्रतिशत महिलायें ही हैं।

यदि हमें विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना ही होगा। महिलाओं का विकास होने पर समाज व देश का विकास अपने आप हो जायेगा। संवैधानिक अधिकारों में विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिवर्तन हुआ है। वर्तमान समय में सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाएं व कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण हो किया जा रहा है। भारतीय नारी, संसार की अन्य किसी भी नारी की भॉति अपनी समस्याओं को सुलझााने की क्षमता रखती है। उन्हें उपयुक्त अवसर देने की आवश्यकता है। महिलाओं को सुदृढ़ बनाकर ही हम भारत को सुदृढ बना सकते है।

विन्ध्यवासिनी पाण्डेय
उप प्रबन्धक(परि0)

ट्रांसफर

लिये प्रखर संकल्प ह्रदय में, आगे बढ़ते जायेंगे,

हडको का गौरव वैभव, जगती में प्रकटायेंगे।

ट्रांसफर से सीखेंगे हम कुछ, निखरके वापस आयेंगे।

क्षेत्रीय कार्यालय अपनी शाखायें, करें प्रभावी प्रस्थापन।

स्वाभिमान से संक्शन रिलीज का करके उच्चाटन।

वित्त पोषण का गौरव वैभव सबको बतलायेंगे।

हडको का गौरव वैभव जगती में प्रकटायेंगे।

निर्भय होकर सतत चलेंगे, संकट की परवाह नही,

लोभ–मोह डिगा न सकते, कर्मयोगी को कष्ट की परवाह नही

हडको का अपना माना है, तन–मन से अपना कर्तब्य निभायेंगे।

नौकरी करनी है तो करनी है, रोटी का संकट आयेगा।

पेट परिवार साथ में, जहॉ भेजोगे चले जायेंगे।

जो कभी हिले नही उनको भी, लेकिन कैसे खिसकावोगे।

हम तो हम ठहरे, तेरा गौरव वैभव चहुॅदिश गायेंगे।

लिये प्रखर संकल्प ह्रदय में आगे बढ़ते जायेंगे,

हडको का गौरव वैभव जगती में प्रकटायेंगे।

****

सुनील कुमार
प्रबन्धक(वित्त)

''यदि आप सौ व्यक्तियों की सहायता नहीं कर सकते तो केवल एक ही जरूरतमंद की सहायता कर दें।''

मेरे आँगन में धूप खिली

मेरे आँगन में धूप खिली,
शायद तुम मुस्काई होगी।
मेरे सपने महके तुमको,
सुधि मेरी ही आई होगी।।
होठों पर कलम धरे शायद,
मेरे खत पढ़ती होगी तुम ।
मुझको बहकाने का नया बहाना,
कोई गढ़ती होगी तुम।।
भावों के ज्वार उठे होंगे,
कागज पर कलम चली होगी।
यादों के बंद लिफाफे पर,
टिकटें चिपकाई होगी।।
कुछ लिखना शेष रहा होगा,
खत तुमने फिर खोला होगा।
और सरल तुम्हारा मन सहसा,
तुम से ही कुछ बोला होगा।।
सुनकर ताजा गुलाब जैसा,
चेहरा कुछ लाल हुआ होगा।
अपने एकाकीपन में तुम,
दिल से शरमाई होगी।।

कान्ती बल्लभ
सहायक प्रबन्धक

गमलों में सब्जी उगाएँ

शहरों में हरा भरा दिखने के लिए लोग अपने घरों को हरा भरा दिखाने के लिए अपनी लान में फलों और पत्तियों के पौंधे लगाते है। जिनकी छोटी है या गमलें ररखने की जगह नही है वह लोग छत पर फूल–पौधे लगाते है। यदि इसी हरे–भरे दिखने वाले स्वरूप में थोड़ा बदल दें, फूल–पत्तियों को लगाने के बजाय अगर हम लोग सब्जी के पौधे लगाएँ तो हरा भरा तो दिखेगा ही मौसमी ताजी सब्जियाँ भी मिलेगी।

फूलों के लिए हम लोग गेंदा, गुड़हल, बेला, गुलाब आदि विभिन्न प्रकार के पौधे गमलों में या फिर लॉन में खाली जगह जमीन पर लगाते है। हमें सब कुछ वही करना है जो फूलों के लिए करते है। सब्जियों के पौधों में फूल भी आयेंगे और उसके बाद सब्जियाँ भी लगेंगी अलग।

जाड़े में तैयार की जाने वाली सब्जियॉ : जाड़े को सब्जियों का मौसम भी कहा जाता है, क्योंकि जाड़े में जितने प्रकार की सब्जियॉ मिलती है उतनी सब्जियाँ अन्य किसी मौसम में नही। जाड़े में हम टमाटर, गोभी, बैगन, हरी मिर्च, लौकी, कद्दू, हरी धनिया, लहसुन, मूली, पालक, गाजर, चुकन्दर और शलजम इत्यादि की खेती कर सकते है। इसमें से टमाटर, गोभी, बैगन हरी मिर्च के पौधे नर्सरी बाजार में मिल जायेगी। बाजार में इन सब्जियों की पौधे दर्जन के भाव में मिल जायेगे। आपके पास कितने गमलें है, कितनी जगह में लगाना है, उसी संख्या में पौधे खरीद कर ला सकते है। लेकिन लौकी कद्दू, हरी धनिया, लहसुन, मूली, पालक, गाजर, चुकन्दर, शलजम के पौधे नही मिलेगें। इनके लिए बाजार में बीज मिलेगें। इसलिए इनकी खेती करने के लिए बीज लाना होगा। बेहतर होगा कि यदि आपके पास लॉन में जगह है तो लौकी, कद्दू को जमीन पर लगायें, क्योंकि लौकी, कद्दू की जड़े बहुत गहरे तक जाती है और इसकी बेल बहुत दूर तक फैलती है जिसे आप छत के ऊपर या बाउन्ड्री पर चढ़ा सकते हो। लहसुन, धनिया पालक, सोया मेथी की जड़े बहुत गहरी नही जाती लेकिन जगह अधिक चाहिए, इसलिए गमलें में लगाने के बजाय छत पर चार इंज मिट्टी डालकर धनिया, सोया–मेथी, पालक के बीज छिड़क देना चाहिए। उपरोक्त वर्णित सभी सब्जियों को बरसात बाद 15 अगस्त से 15 सितम्बर के बीच बो दें या पौधों की नर्सरी बाजार से लाकर गमलों में रोपित कर दें। यह आपको तीन महीने बाद फल देने लगेंगे।
गमलों की तैयारी कैसे करें : पौधों को रोपित करने के लिए गमलों में आधी मिट्टी और आधी गोबर की खाद मिलाकर भरना चाहिए। गमलों को भरने से पहले नीचे की तरफ छेद होना सुनिश्चित कर लेना चाहिए। इस छेद के ऊपर कुछ चार से छः कंकड़ रख देना चाहिए और इन कंकड़ो के ऊपर पत्तियॉ या घास रख देनी चाहिए। ताकि मिट्टी जाकर छेद को बंद न करे। पौधों को रोपित करने से पहले उनकी जड़ों के नीचे हेक्साकोनाजोल, आक्सिक्लोराइड या फिर डाइथेन एम 45 एक चम्मच डाल देना चाहिए ताकि पौधों में कोई बीमारी न लगें। यदि आप आरगेनिक खेती करना चाहते है तो नीम की खली डालें। पौधें रोपित करने के बाद गमलों को 4 से 6 दिन छाया में रखें, क्योंकि छोटे और मुलायम पौधे धूप में सूख सकते है। इसके बाद गमलों को धूप में रख दें। समय–समय पर जब गमलें सूखने लगें तभी पानी डालें।

गर्मी और बरसात में उगाई जानी वाली सब्जियॉ : गर्मी में उगाई जाने वाली सब्जियों में लौकी, कद्दू, भिंडी, टिंडा, टमाटर और करेला आदि प्रमुख है। इन सब्जियों को 15 फरवरी के बाद होली तक अवश्य लगा देना चाहिए। फिर ये पौधे मई–जून–जुलाई तक सब्जियाँ देते रहेगे। गर्मी के महीने में प्रतिदिन पानी देने की जरूरत पड़ेगी। लौकी कद्दू, टमाटर साल के बारह महीना पैदा होती है। अगर होली के आस–पास पौधे रोपित किये है तो यही गमलें बरसात के दिनों में जुलाई अगस्त तक चल जायेगें। वैसे बरसात के मौसम में इन सब्जियों का समय पूरा हो जाता है, इस वजह से सब्जियाँ मॅहगी जो जाती है। लेकिन गर्मी और बरसात में हम गमलों में सब्जियाँ आसानी से उगा सकते है और अपनी लॉन और छत को हरा भरा भी बनाए रह सकते है।

दिनेश चन्द्र बधानी
ए0एफ0(एस0जी0)

माँ का प्यार

पुराने ज़माने में घने जंगल में एक परी रहा करती थी। परी ने जंगल के जानवरों के बच्चों के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें यह घोषणा की गयी कि दो दिन बाद जंगल के टीले पर सभी जानवर अपने बच्चों के साथ इक्ट्ठा होंगे और जिस जानवर का बच्चा सबसे अधिक सुंदर और स्वस्थ होगा, उसको बहुत सारा इनाम दिया जाएगा।

परी की यह घोषणा जंगल में आग की तरह फैल गयी और जंगल के सभी जानवर अपने–अपने बच्चों को नहला–धुलाकर, साफ–सुथरा कर प्रतियोगिता में भाग लेने को टीले पर इक्टठा हुए।

परी ने बारी–बारी सभी बच्चों की जांच की। जांच करने के दौरान ही परी की नज़र एक बंदरिया के बच्चे के कान पर गयी जिसकी खाल निकल गयी थी, उसमें से खून बह रहा था और बीमार भी लग रही थी। यह देखकर परी के मुह से छिः निकल गया और परी बोली, इसके माता–पिता को तो कभी भी पुरस्कार नही मिल सकता। परी की यह बात सुनकर बंदरिया की मां को अच्छा नही लगा, उसने बंदरिया को गले लगाकर कहा तू चिंता मत कर, मेरे लाल। मैं तुझे बहुत प्यार करती हूँ। मेरे लिए तो, तू ही सबसे बड़ा पुरस्कार है। भगवान तुझे लम्बी उम्र दें। यह सुनकर बदंरिया का बच्चा खुश हो गया और अपनी मां से लिपट गया, मानो उसका खोया हुआ विश्वास वापस हो गया हो और वह दुनिया की सबसे सुंदर बंदरिया हो।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि दुनिया में मां के प्यार की तुलना नही की जा सकती है।

ज़ैनब अयाज़ कक्षा 6
पुत्री अयाज़ उद्दीन,
वरि0 प्रबन्ध (परि0)

''लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिये, कभी–कभी गुच्छे की आखिरी चाबी ताला खोल देती है''

''हमारा व्यवहार ही है जो हमारी छवि दूसरों के मन में बनाता है। इसके जरिए हम दुश्मनों को भी अपना बना सकते हैं''

''परिश्रम वह सुनहरी चाबी है, जो खुद किस्मत की फाटक खोल देती है''

मान

इस संसार में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्यार व स्नेह चाहता है, जहां अपनो से प्यार व स्नेह नही मिलता, फिर वह चाहे कितने भी करीबी क्यूं न हो, बेगाने से लगते हैं और उनके साथ रहना कठिन हो जाता है। ऐसे ही एक शहर में एक व्यक्ति जिसका नाम बाबूराम था जो कि बहुत बड़ा व्यापारी था और अब वह अपना सारा काम बच्चों को देकर आराम करना चाहता था। उसको लगता था कि हमने अपने बच्चों के लिए अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी है अब मुझे आराम करना चाहिए।

सेवा निवृत्त के कुछ ही दिन बीते थे कि घर के सभी व्यक्तियों का प्यार व स्नेह उनके लिए बदल गया और उनको एक बोझ समझने लगे। जिससे वह बहुत उदास रहने लगे और एक दिन उन्होने घर छोड़ दिया।

घर छोड़ने के बाद बाबूराम दूसरे शहर चले गये और होटल में रहकर सड़को पर घूमते फिरते रहते थे। एक दिन बाबूराम थक कर फुटपाथ के किनारे बैठ गये तभी एक छोटी ल़ड़की आयी और कहने लगी कि दादा आप थक गये हैं आपके लिए पानी ले आती हूँ। बाबूराम के मन में उस छोटी लड़की के लिए दया आ गयी और वह उसके बारे में जानना चाहते थे। कि वह कौन है और कहां से आयी है। जानकारी करने पर मालूम हुआ कि वह पास के होटल में काम करती है और सड़क के किनारे छोटी से झोपड़ी बनाकर रहती है उसका इस संसार में कोई नही है।

कुछ दिन बाद बाबूराम के घर वालों ने पुलिस में सूचना दे दी थी कि बाबूराम इतने दिनों से गायब हैं पुलिस उनको हर जगह ढूंढ रही थी पुलिस ढूंढते–ढूंढते यहां पंहुच गयी। तब बाबूराम ने जाने से मना कर दिया कि मुझे उस छोटी लड़की के लिए कुछ करना है। उस छोटी सी लड़की के स्नेह और मेहनत से काम कर रोटी खाने के कारण बाबूराम के दिल में दया पैदा हो गयी और वह उस छोटी लड़की के लिए सब कुछ करने को तैयार हो गये।

फरहान उद्दीन जाबरी, कक्षा 11
पुत्र श्री अयाज़ उद्दीन,
वरि0 प्रबन्धक (परि0)

''कहते है शब्दों के दाँत नही होते हैं, लेकिन जब शब्द काटते है तब बहुत दर्द होता है''

''अन्धा वह नहीं है जो देख नहीं सकता। अन्धा वह है जो देखकर अपने दोषों पर पर्दा डालने का प्रयास करता है''

विचारों के मनोभावों की अद्‌भुत कहानीः राजा भोज और व्यापारी

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जैसा भाव हमारे मन में होता है वैसा ही भाव सामने वाले के मन में आता है। इस संबंध में एक ऐतिहासिक घटना सुनी जाती है जो इस प्रकार हैः–

एक बार राजा भोज की सभा में एक व्यापारी ने प्रवेश किया। राजा ने उसे देखा तो देखते ही उनके मन में आया कि इस व्यापारी का सब कुछ छीन लिया जाना चाहिए। व्यापारी के जाने के बाद राजा ने सोंचा मैं प्रजा को हमेशा न्याय देता हूँ। आज मेरे मन में यह अन्याय पूर्ण भाव क्यों आ गया कि व्यापारी कर संपत्ति छीन ली जाए।

उसने अपने मंत्री से यही सवाल किया। मंत्री ने कहा इसका सही जवाब कुछ दिन बाद दे पाऊँगा। राजा ने मंत्री की बात स्वीकार कर ली। मंत्री विलक्षण बुद्धि का था वह इधर–उधर के सोच–विचार में समय न खोकर सीधा व्यापारी से मिलने पहुँचा। व्यापारी से दोस्ती करके उसने व्यापारी से पूछा तुम इतने चिंतित और दुखी क्यों हो, तुम तो भारी मुनाफे वाला चंदन का व्यापार करते हो। व्यापारी बोला धारा नगरी सहित मैं कई नगरों में चंदन की गाड़ियां भरे फिर रहा हूँ पर इस बार चन्दन की बिक्री ही नहीं हुई। बहुत सारा धन इसमें फंसा पड़ा है। अब नुकसान से बच पाने का कोई उपाय नहीं है।

व्यापारी की बातें सुन मंत्री ने पूछा क्या अब कोई भी रास्ता नहीं बचा है। व्यापारी हंस कर कहने लगा और राजा भोज की मृत्यु हो जाये तो उनके दाह संस्कार के लिए सारा चंदन बिक सकता है। मंत्री को राजा का उत्तर देने की सामग्री मिल चुकी थी। अगले दिन मंत्री ने व्यापारी से कहा कि तुम प्रतिदिन राजा का भोजन पकाने के लिए एक मन 40 किलो चंदन दे दिया करो और नकद पैसे उसी समय ले लिया करो। व्यापारी मंत्री के आदेश को सुनकर बड़ा खुश हुआ। वह अब मन नही मन राजा की लंबी उम्र की कामना करने लगा।

एक दिन राजसभा चल रही थी। व्यापारी दोबारा राजा को वहां दिखाई दे गया। तो राजा सोचने लगा यह कितना आकर्षक व्यक्ति है इसे क्या पुरूस्कार दिया जाये। राजा ने मंत्री को बुलाया और पूंछा मंत्रीवर यह व्यापारी जब पहले बार आया था तब मैंने तुमसे कुछ पूंछा था उसका उत्तर तुमने अभी तक नहीं दिया। खैर आज जब मैंने इसे देखा तो मेरे मन का भाव बदल दिया। पता नहीं आज मैं इस पर खुश क्यों हो रह हूँ और इस इनाम देना चाहता हूँ।

मंत्री को तो जेसे इसी क्षण की प्रतीक्षा थी। उसने समझाया, महाराज दोनों ही प्रश्नों का उत्तर आज दे रहा हूँ। जब यह पहले आया था तब अपनी चन्दन की लकड़ियों का ढेर बेंचने के लिए आपकी मृत्यु के बारे में सोंच रहा था। लेकिन अब यह रोज आपके भोजन के लिए एक मन लकड़ियॉ देता है इसलिए अब ये आपके लम्बे जीवन की कामना करता है। यही कारण है कि पहले आप इसे दण्डित करना चाहते थे और अब इनाम देना चाहते हैं।

मित्रों अपनी जैसी भावना होती है वैसा ही प्रतिबिंब दूसरे के मन पर पड़ने लगता है। जैसे हम होते हैं वैसे ही परिस्थितियाँ हमारी ओर आकर्षित होती हैं। हमारी जैसी सोंच होगी वैसे ही लोग हमें मिलेंगे। यही इस जगत का नियम है। हम जैसा बोते हैं वैसा काटते हैं, हम जैसा दूसरों के लिए मन में भाव रखते हैं, वैसा ही भाव दूसरों के मन में हमारे प्रति हो जाता है। अतः इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि हमेशा औरों के प्रति सकारात्मक भाव रखें।

उत्कर्ष वर्मा
पुत्र–श्री अनिल कुमार वर्मा
प्रबन्धक (वित्त)

हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में कार्पोरेट की सामाजिक ज़िम्मेदारी के अन्तर्गत स्वीकृत परियोजनाएं

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (हडको) आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के अन्तर्गत भारत सरकार का एक उपक्रम है। देश भर में आवास और शहरी विकास गतिविधियों के क्षेत्र में सामाजिक न्याय के साथ लाभप्रदता के अपने आदर्श वाक्य के साथ सक्रिय योगदान दे रहा है। समाज में अपने योगदान के लिए प्रतिबद्ध होने के कारण कारपोरेट की सामाजिक ज़िम्मेदारी (सीएसआर) के अन्तर्गत वित्तीय सहयोग करने की गतिविधियों में शामिल है। हडको समय–समय पर कारपोरेट की सामाजिक ज़िम्मेदारी (सीएसआर) के अन्तर्गत विभिन्न सीएसआर योजनाएं जिसमें एक प्रारूप संरचित सीएसआर नीति और थ्रस्ट क्षेत्र शामिल हैं जो कंपनी अधिनियम 2013 के प्रावधानों के अनुरूप हैं। हडको ने अपने शुद्ध लाभ का एक हिस्सा निर्धारित करने के लिए एक विशेष बजट बनाया है। सीएसआर अन्तर्गत हडको राज्य सरकार की अभिकरणों को वित्तीय सहायता प्रदान करने में सक्रिय है। हडको क्षेत्रीय कार्यालय ने उत्तर प्रदेश में विभिन्न गतिविधियों में अनुदान प्रदान किया है। कुछ परियोजनाएं हडको द्वारा वित्त पोषित हैं। सीएसआर के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य में निम्नलिखित योजनाएं हैं।

हडको सीएसआर के अन्तर्गत वीरांगना झलकारी बाई इंटर कालेज, गांव – परौख, ब्लाक – डेरापुर, ज़िला कानपुर देहात, उत्तर प्रदेश में तीन कक्षाएं, लैब, प्रशासनिक कार्यालय शौचालय के साथ, सीढ़ी एवं गलियारे के निर्माण हेतु रूपये 75 लाख का वित्तीय सहयोग किया गया। जिसका भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा उद्घाटन किया गया।

हडको सीएसआर के अन्तर्गत डा0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ में अध्यनरत् निःशक्त विद्यार्थियों के लिए एक व्हील चेयर लिफ्ट युक्त बस एवं तीन बैटरी आपरेटेड वेहिकल्स के रूपये 56.60 लाख का वित्तीय सहयोग।

हडको सीएसआर के अन्तर्गत रामनगर, वाराणसी में कम्यूनिटी सेन्टर/नाइट शेल्टर के निर्माण एवं रायबरेली में सिटी रिर्सोस सेन्टर के निर्माण हेतु वित्तीय सहयोग।

हडको सीएसआर के अर्न्तगत डलमऊ में सालिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रोजेक्ट हेतु वित्तीय सहयोग के संबन्ध में।

इसके अतिरिक्त हडको क्षेत्रीय कार्यालय ने कोविड–19 महामारी हेतु विभिन्न परियोजनाओं में वित्तीय सहायता देने को तैयार है जैसे प्रदेश के जिला अस्पतालों में आक्सीजन प्लांट के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता के सम्बन्ध में कार्य चल रहा है।

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय की गतिविधियॉ :

(1) हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा : दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ में दिनांक 01.09.2021 से 15.09.2021 के दौरान हिन्दी राजभाषा पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस 14.09.2021 को हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़ा का आरम्भ दिनांक 01.09.2021 को किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कोविड–19 महामारी हेतु हडको एवं केन्द्र सरकार से समय–समय पर प्राप्त दिशा–निर्देश को ध्यान में रखकर आनलाइन मनाया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं क्रमशः हिन्दी निबन्ध लेखन, आशुभाषण, वाद–विवाद, हिन्दी शब्द ज्ञान आयोजित की गयीं।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी दिवस एवं कार्यान्वयन समिति की बैठक की गयी तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। महाप्रबन्धक ने दिनांक 15.09.2021 द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये। इस दौरान महाप्रबन्धक ने सभी से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने पर ज़ोर दिया।

हिन्दी पखवाड़ा, 2021 में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में आयोजित हिन्दी आशु भाषण प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा, 2021 में आयोजित हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता

(2) हडको क्षेत्रीय कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

हडको क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ में सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम का प्रारम्भ कोविड–19 के निवारक दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए मनाया गया। जिसमें नागरिकों का समर्थन और प्रतिबद्धता हेतु सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा तथा कारपोरेट/फर्म/संस्थाओं हेतु सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा को सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा आनलाइन लिया गया। सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा के प्रसार और प्रचार के लिए वेबसाइट, व्हाटसएप, एसएमएस द्वारा संबन्धित लोगों को प्रतिज्ञा लेने हेतु प्रोत्साहित भी किया गया। इस क्रम में कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के बीच 'सतर्क भारत–समृद्ध भारत' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता व स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त भ्रष्टाचार विरोधी प्रसार को सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे ई–मेल, व्हाटसएप, एसएमएस का उपयोग करते हुए संबन्धित विक्रेताओं, आपूर्तिकर्ताओं, ठेकेदारों और नागरिकों को जागरूक भी किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह से सम्बन्धित कुछ छाया चित्र।

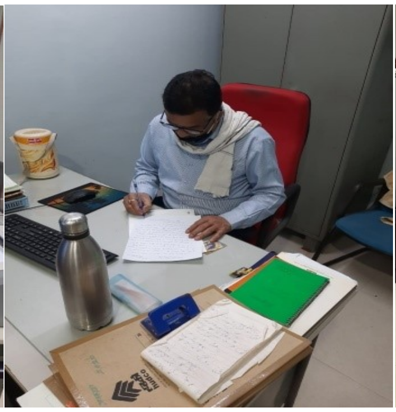

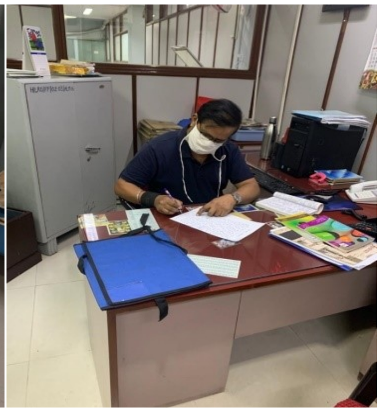

निबन्ध प्रतियोगिता का आनलाइन आयोजन

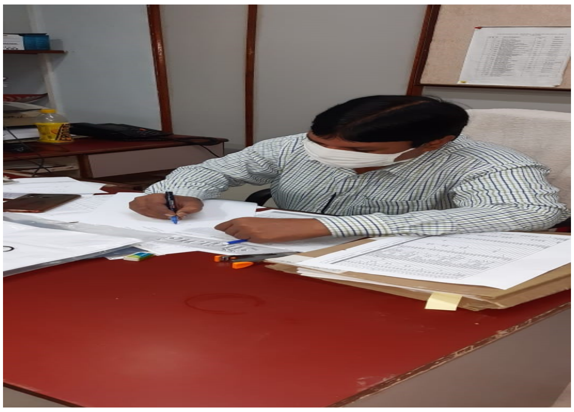

स्लोगन प्रतियोगिता का आनलाइन आयोजन

(उपरोक्त चित्र) लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यरत श्री अनिल कुमार, वरि0 प्रबन्धक(राजभाषा) के सेवानिवृत्ति के विदाई समारोह का है। हडको परिवार उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की प्रार्थना करता है।

उत्तर प्रदेश के विकास में हडको का योगदान।

एक दृष्टि में :

कुल स्वीकृति योजनाएँ	रू0 करोड़ में	कुल ऋण अवमुक्त परियोजनाए	रू0 करोड़ में
आवासीय–1014	4694	आवासीय	4693
आधारभूत–961	14124	आधारभूत	12824
हडको निवास–502	18.00	हडको निवास	14.00

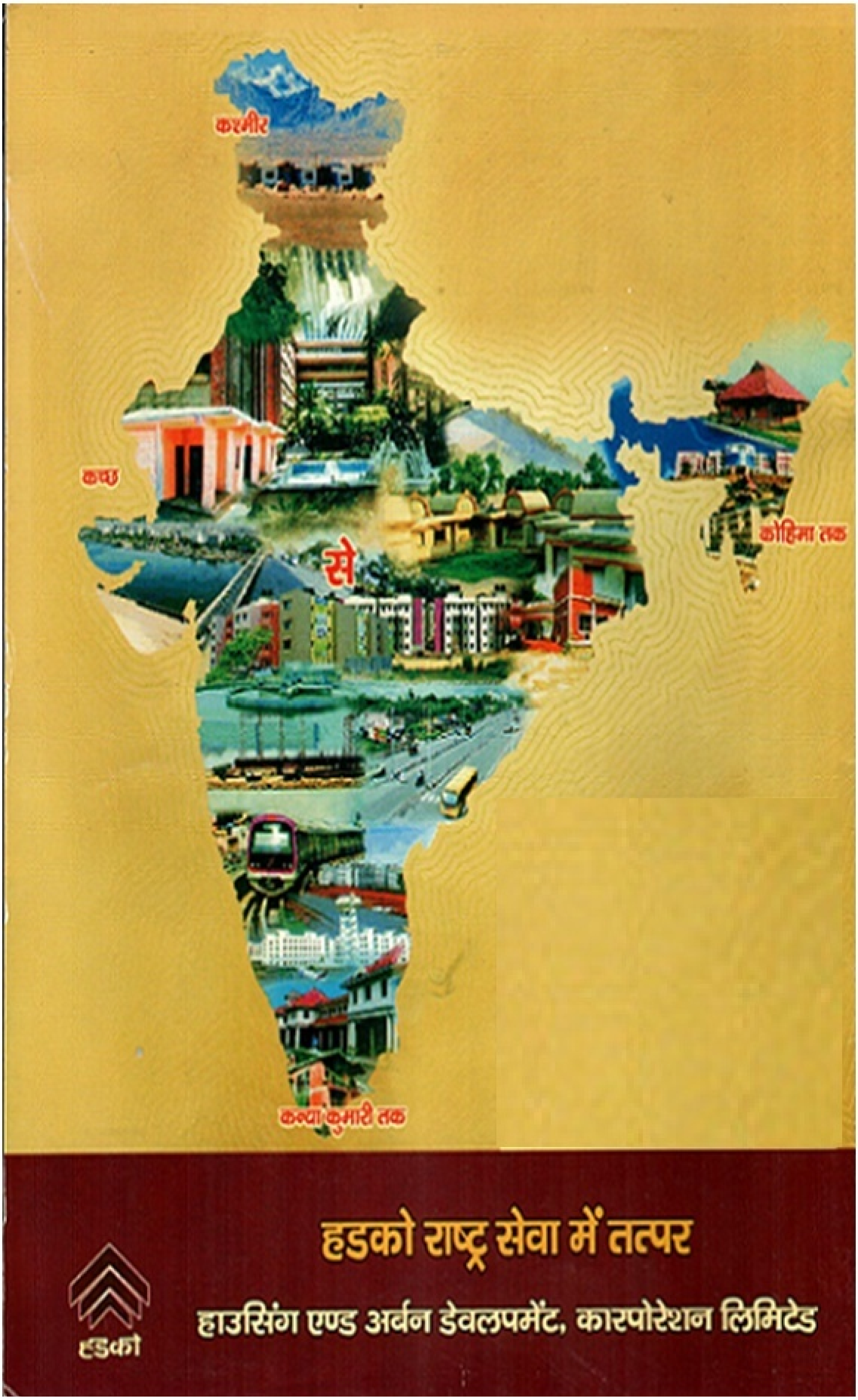
कश्मीर
कच्छ
से
कोहिमा तक
कन्या कुमारी तक
हडको राष्ट्र सेवा में तत्पर
हडको
हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट, कारपोरेशन लिमिटेड